जुलाई (प्रथम) 2021 | ₹30.00

चंपक

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

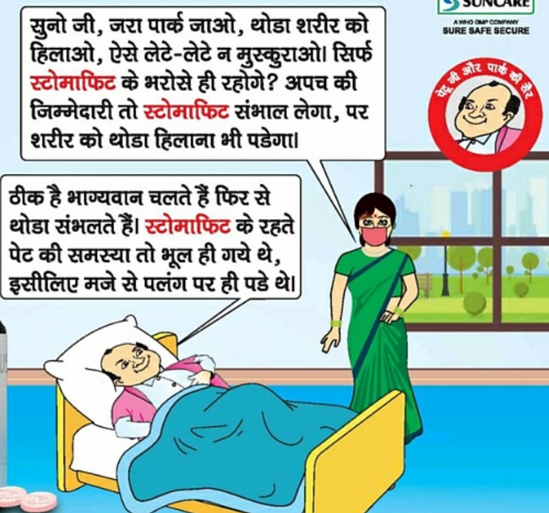
सुनो जी, जरा पार्क जाओ, थोडा शरीर को हिलाओ, ऐसे लेटे-लेटे न मुस्कुराओ। सिर्फ स्टोमाफिट के भरोसे ही रहोगे? अपच की जिम्मेदारी तो स्टोमाफिट संभाल लेगा, पर शरीर को थोडा हिलाना भी पडेगा।
ठीक है भाग्यवान चलते हैं फिर से थोडा संभलते हैं। स्टोमाफिट के रहते पेट की समस्या तो भूल ही गये थे, इसीलिए मजे से पलंग पर ही पडे थे।
पेट की और पार्क की सैर

New Pack
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT & HEALTHY
STOMAFIT
CHEWABLE
KEEPS STOMACH FIT & HEALTHY

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

only books magazine

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

जिस प्रकार बच्चों के भावनात्मक विकास की पूर्ति माता-पिता करते हैं। उसी प्रकार बच्चों में आयरन और फोलेट की कमी को **हेमोकॉल** दूर करता है। बढती उम्र में बच्चों को आयरन और फोलेट की जरूरत होती है जो उन्हें **हेमोकॉल** में मिलता है। साथ ही माता-पिता अपने भाग-दौड भरी जिंदगी में शरीर का ध्यान नहीं रख पाते। उनकी रोजाना की आयरन और फोलेट की जरूरतों का ध्यान **हेमोकॉल** रखता है।

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid
शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वादिष्ट

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध (450ml)

300ML, 450ML

भूख न लगना, साधारण कमजोरी, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट, गर्भावस्था में खून की कमी, मासिक धर्म तथा कोविड-19 से आई कमजोरी को दूर करने में सहायक

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें

चंपक

जुलाई (प्रथम) 2021 अंक : 1216

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

सुनो कहानी

बारिश में कैटी 4
वर्षा का जल संचयन 8
नए दोस्त का स्वागत 13
सब से अच्छा दिन 20
गुप्त सुरंग 29
मोना और काजल की जासूसी 37
भैंस का जन्मदिन केक 47

मुखपृष्ठ

मानसून अपने साथ खूबसूरत मौसम, गरमागरम स्नैक्स और अच्छी यादों को लाता है. आप इस मौसम के बारे में क्या पसंद करते हो? आप को जो पसंद हो उसे writetochampak@delhipress.in पर शेयर करें.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो 7
देखो हंस न देना 10
बारिश में जानवर भीगने से बचने.... 12
बताओ तो जानें 18
छिपे चित्र ढूंढ़ें 23
बोर्ड गेम खेलें 24
बिंदु मिलाओ 28
पद चिन्हों का मिलान करो 33
स्मार्ट 34
चित्र पूरा करें 36
सुलझाएं 41
अंतर बताओ 46

only books magazine

चित्र कथाएं

डमरू और म्यूजिकल नोट्स 11
चीकू 26
दादाजी और मानसून 42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान 19
नन्ही कलम से 44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

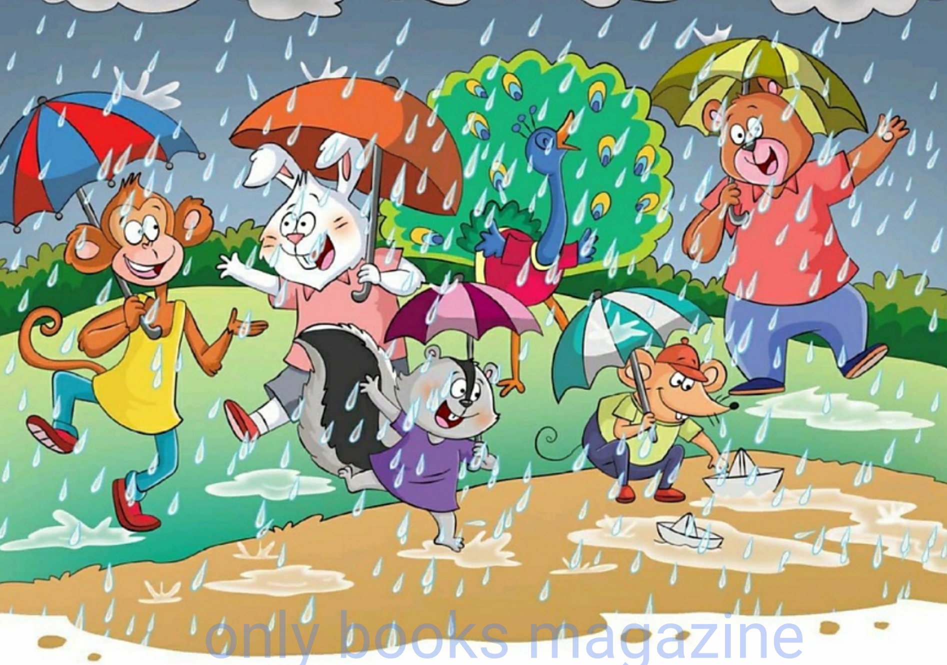

only books magazine

बारिश में कैटी

कहानी ● मनोज राय

टप...टप...टप... बारिश की पहली बूंद जैसे ही चंपकवन की सूखी मिट्टी पर पड़ी, पूरे जंगल में सौंधी महक फैल गई.

जंपी बंदर ने अपनी खिड़की से बाहर देखा, ''अरे वाह, बारिश हो रही है.''

वह चहक उठा और तुरंत पेड़ पर चढ़ गया.

''देखो दोस्तो, बारिश हो रही है. पहली बारिश का अलग ही मजा है,'' जंपी ने आवाज लगाई.

देखते ही देखते वहां चीकू खरगोश, सैली गिलहरी और रौकी कुत्ता सहित कई जानवर पहुंच गए.

''इस बारिश का मुझे काफी दिनों से इंतजार था,'' सैली बोली, ''थैंक्यू जंपी, जो तुम ने हमें यह सूचना दी.''

''अरे, लेकिन मैं तो पहले से ही इतनी देर तक नाच कर तुम लोगों को बताने की कोशिश कर रहा था, तब तो किसी ने ध्यान नहीं दिया,'' पैनी मोर ने मुंह फुलाते हुए कहा.

''सौरी, पैनी,'' जंपी ने हंसते हुए कहा, ''दरअसल, बारिश आने की सूचना तुम ने ही हम सब को दी है. अब तो खुश हो न.''

जंपी की बात खत्म भी नहीं हुई थी कि अपने रंगबिरंगे पंख फैला कर पैनी नाचने लगा. उसे देख सभी की खुशियां दोगुनी हो गईं.

“आज से मैं भी चैन से सोऊंगा,” ब्लैकी भालू ने राहत की सांस लेते हुए कहा.

“इतने दिनों से गरमी से मैं पागल हो गया हूं, लेकिन अब मौसम खुशनुमा हो जाएगा.”

“वह सब तो ठीक है, लेकिन कैटी बिल्ली कहां है?” रौकी ने इधरउधर देखते हुए पूछा.

“और वह कहां होगी? बारिश से बचने के लिए वह भी अपने घर में छिपी होगी,” पानी में कागज की नाव को चलाते हुए मीकू ने कहा, “दरअसल उसे बारिश पसंद नहीं है.”

“अच्छा, भला क्यों?” सैली ने हैरानी से पूछा.

“हो सकता है कि उसे बारिश में भीगने से सर्दी लग गई हो?” बोबो बैल बोला.

“नहीं, हम सब भी तो बारिश में खड़े हैं, पर हम भीग कहां रहे हैं? हमारे पास तो छतरियां हैं,” मीकू ने कहा.

“तो फिर क्या वजह है?” रौकी ने जानना चाहा.

मीकू ने कहा, “बारिश में उसे अपने सफेद फरों पर कीचड़ लगाना पसंद नहीं है,” सब यह सुन कर हैरान रह गए.

“बारिश के दौरान थोड़ा गंदा होना तो सामान्य बात है. इस में इतना परेशान होने की क्या बात है?” सैली ने कहा.

“हां, तुम्हारी बात सही है. उसे भी यहां हमारे साथ होना चाहिए,” ब्लैकी बोला.

“ठहरो. मैं उसे फोन करता हूं,” बोबो ने कहा.

बोबो ने कैटी को पुकारा.

“मैं बारिश में बाहर नहीं आऊंगी. मेरे शरीर पर कीचड़ लग जाएगा, जो मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं है,” कैटी ने उत्तर दिया.

“अरे, ऐसा कुछ नहीं होगा. हम सभी छतरी ले कर आए हैं. तुम चिंता मत करो,” जंपी ने कहा.

only books magazine

उन की बातें सुन कर आखिरकार कैटी अपने घर से बाहर निकली. वह धीरेधीरे अपने कदम आगे बढ़ाते हुए बाहर आई. पहले तो आसपास कीचड़ देख उस का मन वापस घर में घुसने को हुआ, लेकिन दूर जानवरों को देख कर उस की हिम्मत बढ़ी और अपनी गुलाबी छतरी खोलती हुई वह बाहर आ गई.

“आओआओ, डरो नहीं. हम सब यहां हैं. हम बस, कुछ ही देर बारिश में रहेंगे, फिर अपनेअपने घर वापस चले जाएंगे,” सैली ने कहा.

कैटी उन के पास पहुंच गई.

"देखो, कितनी ताजी हवा बह रही है," रौकी ने लंबी सांस लेते हुए कहा, "क्या आप घर में बैठे इतनी ताजी हवा ले पाती?"

"बात तो तुम सही कह रहे हो," कैटी के मुंह से निकला. लेकिन आसपास कीचड़ देख कर वह नाकमुंह सिकोड़ रही थी.

"छी," मीकू को पानी में नाव चलाते देख वह बोली, "तुम इतने गंदे पानी में नाव कैसे चलाते हो?"

यह सुन कर मीकू खुश हुआ. उसे शरारत सूझी और बोला, "ऐसे," इतना कहते हुए वह पानी में छपछप करने लगा और पानी के छींटे कैटी के सफेद फरों पर पड़ कर काले धब्बे बन गए.

only books magazine

कैटी यह देख कर चौंक गई.

वह आगबबूला हो कर बोली, "तुम्हारी इतनी हिम्मत? मैं अभी तुम्हें सबक सिखाती हूं."

वह मीकू के पीछे दौड़ी. इस चक्कर में न तो उसे अपनी छतरी का खयाल रहा और न ही सैंडिल का. उस ने कीचड़ में दौड़ते हुए उसे पकड़ लिया.

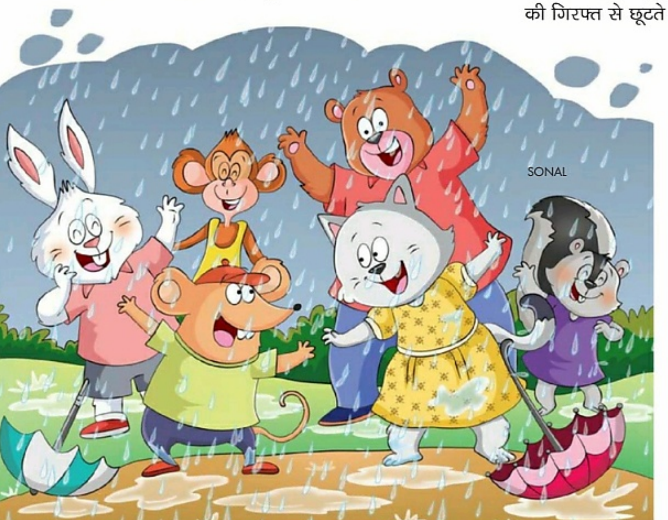

"अब मुझे बताओ, तुम ने ऐसा क्यों किया?" उस ने गुस्से में पूछा.

"तुम्हारी भलाई के लिए किया कैटी. अब देखो, तुम्हें इस कीचड़ की बिलकुल परवाह नहीं होगी. तुम पहले कैसे कीचड़ के डर से बारिश में घर से ही नहीं निकल रही थी."

"वाह," कैटी का मुंह खुला का खुला रह गया. उस ने अपने पैरों की तरफ देखा. सचमुच उस के सफेद पैर अब कीचड़ में सन कर काले हो चुके थे, लेकिन अब उसे इस की परवाह नहीं थी.

लेकिन वह अभी भी मीकू की हरकत से नाराज थी, उस ने कहा, "क्या मतलब है तुम्हारा? क्या तुम ने जानबूझ कर ऐसा किया है?"

"और नहीं तो क्या. अगर ऐसा नहीं करता तो..."

"ठीक है, मैं समझ गई," कैटी अपनी पकड़ ढीली करती हुई बोली, "लेकिन आईंदा ऐसी हरकत मत करना."

"मैं वादा करता हूं कि अब ऐसा नहीं करूंगा," उस की गिरफ्त से छूटते ही मीकू बोला.

इतने में दूसरे जानवर भी वहां पहुंच गए. उन्हें लग रहा था कि मीकू की खूब पिटाई हुई होगी.

लेकिन अचानक जब कैटी ने मीकू को सौरी और थैंक्यू कहा, तो सभी एकदूसरे का मुंह ताकने लगे.

बाद में जब मीकू ने उन्हें पूरी घटना के बारे में बताया तो सभी जोरजोर से हंसने लगे. ●

सुंदर रंग भरो

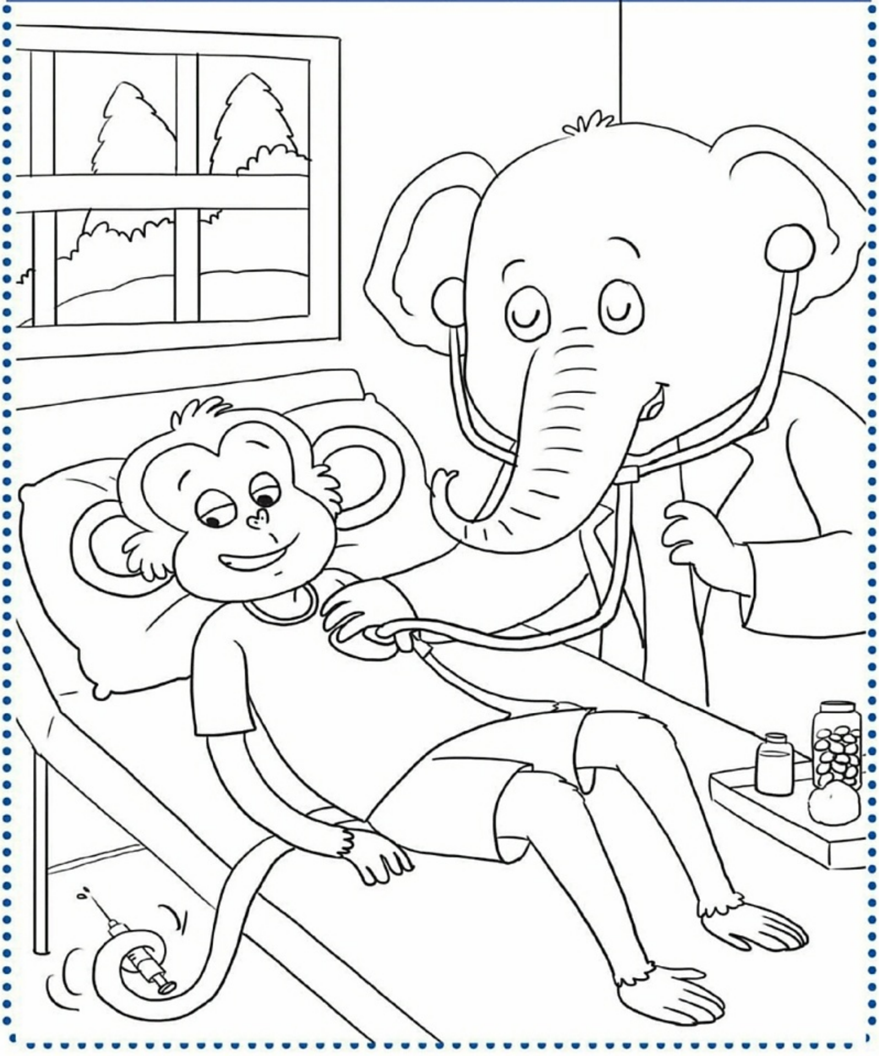

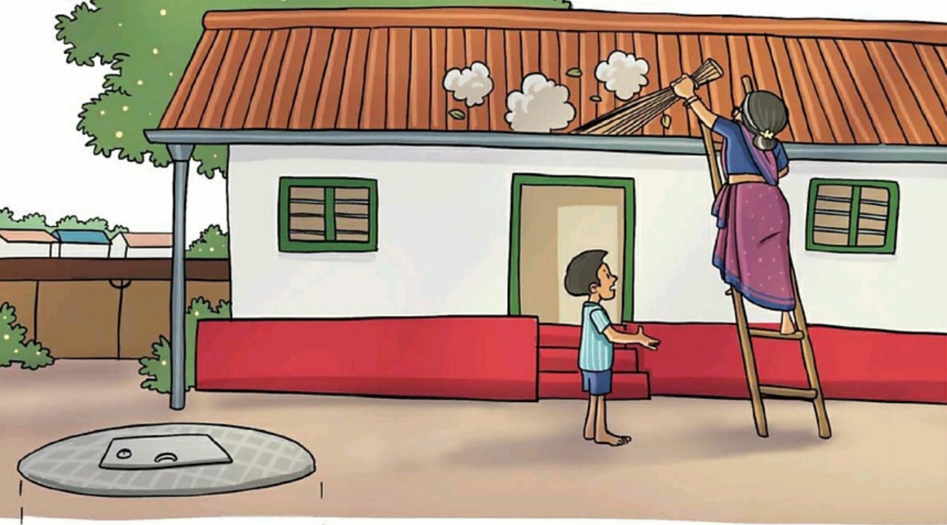

वर्षा का जल संचयन

कहानी ● जयबाला प्रकाश

ध्रुव के मम्मीपापा को एक साल के लिए विदेश जाना था. इसलिए उन्होंने ध्रुव को एक साल के लिए उस की दादीमां के पास तमिलनाडु छोड़ दिया. एक दिन उस ने दादीमां को छत में झाड़ू लगाते हुए देखा. दादीमां ने उस से कहा, "ध्रुव, बरसात का मौसम आने वाला है. इसलिए उस से पहले हमें छत की सफाई ठीक से करने की जरूरत है."

only books magazine

ध्रुव हैरान था, क्योंकि छत पहले से ही काफी हद तक साफ थी. उस ने दादीमां से कहा, "दादीमां, बारिश से गंदगी साफ हो जाएगी, तो हम इसे साफ क्यों कर रहे हैं?"

दादीमां ने एक मुसकान के साथ कहा, "मुझे बारिश आने से पहले छत साफ करनी पड़ती है."

ध्रुव हैरान था. उस की दादीमां ने उसे छत के एक कोने में पानी का निकास (छेद) दिखाया और उस से पूछा, "क्या तुम जानते हो, यह क्या है?"

ध्रुव ने जवाब दिया, "हां, मैं जानता हूं, यह छेद पाइप से जुड़ा है जो छत पर गिरने वाले बारिश के पानी को नीचे नाली में ले जाता है."

दादीमां हंसी और बोलीं, "तुम्हारा उत्तर आधा सही है. बारिश का पानी इस पाइप से नाली में नहीं बल्कि भूमिगत टैंक में जाता है."

ध्रुव हैरान था. "आप के कहने का मतलब है कि आप भूमिगत टैंक में बारिश के पानी को इकट्ठा कर रही हैं. क्यों, दादीमां?"

"हम लोग बारिश के पानी का इस्तेमाल खाना पकाने, कपड़े धोने, नहाने आदि में करेंगे," दादीमां ने जवाब दिया.

ध्रुव ने पूछा, "लेकिन दादीमां, आप बारिश का पानी जमा क्यों करती हैं? यहां तो हर साल बारिश होती है और पूरे शहर में बाढ़ आ जाती है."

"तुम्हें अपने प्रश्न का जवाब गरमियों में मिल

जाएगा. अभी तुम छत साफ करने में मेरी मदद करो,” दादीमां ने इतनी सख्ती से कहा कि ध्रुव के पास उन की आज्ञा का पालन करने के अलावा कोई चारा ही न था.

अगले कुछ सप्ताह धुआंधार बारिश हुई. गलियों में बारिश का पानी भर गया और बहने लगा.

ध्रुव ने अपनी खिड़की से मूसलाधार बारिश को देखा और सोचा, ‘दादीमां को वास्तव में बारिश के पानी को इकट्ठा करने की जरूरत नहीं है.’

कुछ महीने बाद तपती गरमी आ गई. तालाब नदियां, झीलें और कुएं सूख गए. पानी की एक बालटी के लिए लोगों को पानी के टैंकरों के सामने कतार में लगना पड़ रहा था. ध्रुव ने अपनी खिड़की से देखा कि छोटीछोटी लड़कियां अपने हाथों में घड़े और बालिटयां ले कर अपनी बारी का घंटों इंतजार कर रहे थे. वह दौड़ कर अपनी दादीमां के पास गया और बोला, “दादीमां क्या मैं भी अपने घर के लिए एक बालटी पानी लाने चला जाऊं?”

लेकिन दादीमां हंसीं और बोलीं, “हमारे पास पूरी गरमियों के लिए काफी पानी है. आओ और देखो.” वह उसे बाहर ले गईं और घर के अहाते में भूमिगत टैंक के ढक्कन को खोल कर दिखाया.

ध्रुव ने झांक कर देखा और खुशी से गहरी सांस लेते हुए चीखा, “वाउ, यह टैंक तो बहुत बड़ा है और साफ पानी से भरा पड़ा है.”

तब दादीमां ने विस्तार से बताया, “यह बारिश का पानी है, जो हमारी छत पर गिरता था. अब यह पूरी गरमी के मौसम में हमारी मदद करेगा.”

ध्रुव का चेहरा खुशी से चमक उठा और वह दादीमां के गले लग गया, “यह तो बहुत ही ठंडा है,” उस ने कहा. अब उसे पानी की चिंता नहीं हो रही थी. वह खुश था. ●

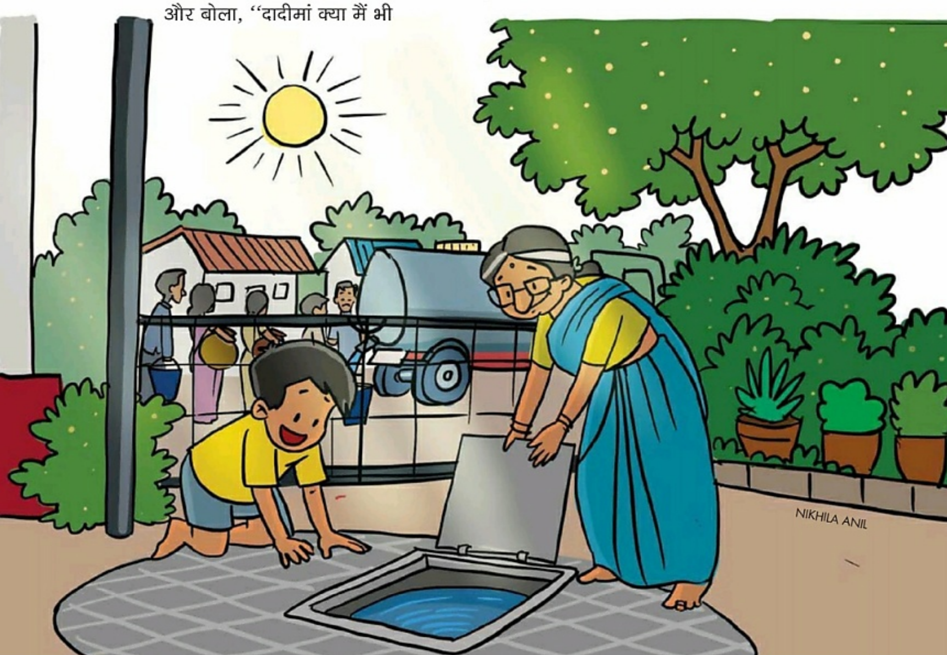

देखो हंस न देना

टीचर (मोंटू से) : तुम स्कूल आने में क्यों लेट हो जाते हो? क्या तुम्हारे पास घड़ी नहीं है?

मोंटू : सर, मेरे पास घड़ी तो है लेकिन मुझे घड़ी देखने का समय नहीं मिलता.

अमायरा कवलकर, 5 वर्ष, पुणे

मम्मी (नन्ही बेटी से) : तरबूज कहां चला गया?

नन्ही : तरबूज का सिर फट गया था और उस से खून बह रहा था और कुछ ही मिनट में वह मर गया.

मम्मी : क्या?

नन्ही बेटी : मैं असल में इसे किचन से अपने कमरे तक की सैर अपने स्कूटर पर करा रही थी और वह गिर गया.

रानिशा मित्रा, 12 वर्ष, कोलकाता

आदमी (लाइब्रेरियन से) : मैं 'फियर औफ हाइट्स' पुस्तक को ढूंढ़ रहा हूं.

लाइब्रेरियन : सर, वह 10वीं शैल्फ पर है.

वैभव श्रीवास्तव, 14 वर्ष, अमृतसर

सोनू (मोनू से) : एक आलू जिसे बुखार हो गया हो, क्या कहलाता है?

मोनू : आलूबुखारा.

अनुशा जैन, 11 वर्ष, गाजियाबाद

बेटा (पापा से) : पापा, मैं हंग्री हूं.

पापा : हाय हंग्री, मैं तुम्हारा पापा हूं.

कुशाल कुमार एस वी, 9 वर्ष, बैंगलुरु

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

टीचर (छात्र से) : अलैक्जैंडर द ग्रेट की मौत कहां हुई थी?

छात्र : इतिहास की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ संख्या 46 में.

प्रदयुम्न शिनोय, 11 वर्ष, मुंबई

विक्की (चिंकी से) : जब तुम जैलीफिश खाते हो तो तब क्या होता है?

चिंकी : तुम्हें नहीं पता, मैं उछलना शुरू कर देती हूं.

ध्रुति तनेजा, 6 वर्ष, नोएडा

विमल (कोमल से) : काम के दौरान नर्स को लालपैन की जरूरत क्यों पड़ी?

कोमल : शायद उसे ब्लड ड्रा करने की जरूरत पड़ जाए.

दर्ष भुवा, 9 वर्ष, गुजरात

तीन भालू आपस में चैटिंग कर रहे थे. ध्रुवीय भालू : अरे साथियो, क्या तुम जानते हो कि मैं बर्फ यानी स्नो में रहता हूं इसलिए मेरी त्वचा का रंग भी व्हाइट हो गया है जैसा स्नो का होता है.

भूरा भालू : हां, यह बिलकुल सही बात है. मुझे देखो, मैं जंगल में रहता हूं, जहां की मिट्टी भूरी है इसलिए मैं भी भूरा हो गया हूं.

काला भालू : अरे... तुम्हारे कहने का क्या मतलब है? तब मैं कहां का रहने वाला हूं?

ध्रुवीय और भूरा भालू एकसाथ : तुम ब्लैक फौरेस्ट यानी काले जंगल के रहने वाले हो.

भारवि मोराजकर, 8 वर्ष, मुंबई

चिंटू (पिंटू से) : खट्खट्खट...

पिंटू : कौन है?

चिंटू : पीड़ा है, ऐक है, ऐक.

पिंटू : कौन पीड़ा, कैसा ऐक?

चिंटू : जब तुम छींकते हो, तो अपनी कोहनी का इस्तेमाल करना. पता चल जाएगा.

आदित्य पंत, 12 वर्ष, देहरादून

टीचर (बच्चे से) : मैं ने कल तुम्हें हिंदी में जो लेसन पढ़ाया था, उसे सुनाओ.

बच्चा : सर, आता नहीं है.

टीचर : आता नहीं है, तो ऐसा करो, तुम्हें जो आता है, वही सुना दो.

बच्चा : सर, मुझे तो गाना आता है, वही सुना दूं?

विवेक वर्धन, 12 वर्ष, दिल्ली

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और SMS: 8657402248
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और म्यूजिकल नोट्स

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

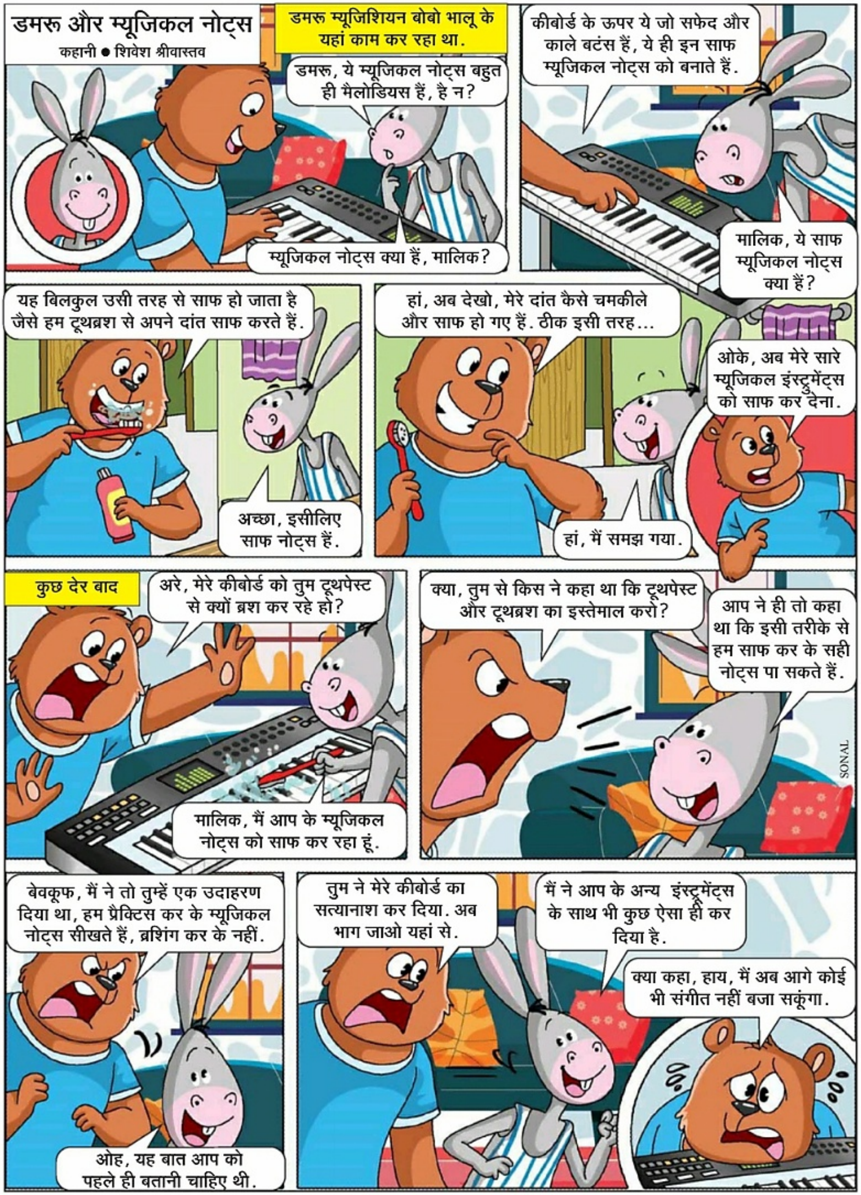
डमरू म्यूजिशियन बोबो भालू के यहां काम कर रहा था.
डमरू, ये म्यूजिकल नोट्स बहुत ही मैलोडियस हैं, है न?
म्यूजिकल नोट्स क्या हैं, मालिक?
कीबोर्ड के ऊपर ये जो सफेद और काले बटंस हैं, ये ही इन साफ म्यूजिकल नोट्स को बनाते हैं.
मालिक, ये साफ म्यूजिकल नोट्स क्या हैं?
यह बिलकुल उसी तरह से साफ हो जाता है जैसे हम टूथब्रश से अपने दांत साफ करते हैं.
अच्छा, इसीलिए साफ नोट्स हैं.
हां, अब देखो, मेरे दांत कैसे चमकीले और साफ हो गए हैं. ठीक इसी तरह...
हां, मैं समझ गया.
ओके, अब मेरे सारे म्यूजिकल इंस्ट्रुमेंट्स को साफ कर देना.
कुछ देर बाद
अरे, मेरे कीबोर्ड को तुम टूथपेस्ट से क्यों ब्रश कर रहे हो?
मालिक, मैं आप के म्यूजिकल नोट्स को साफ कर रहा हूं.
क्या, तुम से किस ने कहा था कि टूथपेस्ट और टूथब्रश का इस्तेमाल करो?
आप ने ही तो कहा था कि इसी तरीके से हम साफ कर के सही नोट्स पा सकते हैं.
SONAL
बेवकूफ, मैं ने तो तुम्हें एक उदाहरण दिया था, हम प्रैक्टिस कर के म्यूजिकल नोट्स सीखते हैं, ब्रशिंग कर के नहीं.
ओह, यह बात आप को पहले ही बतानी चाहिए थी.
तुम ने मेरे कीबोर्ड का सत्यानाश कर दिया. अब भाग जाओ यहां से.
मैं ने आप के अन्य इंस्ट्रूमेंट्स के साथ भी कुछ ऐसा ही कर दिया है.
क्या कहा, हाय, मैं अब आगे कोई भी संगीत नहीं बजा सकूंगा.

बारिश में जानवर भीगने से बचने के लिए कहां छिपते हैं?

सही विकल्प पर घेरा लगाएं.

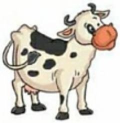
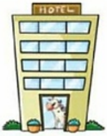

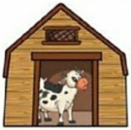
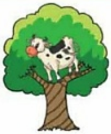

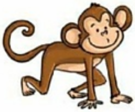
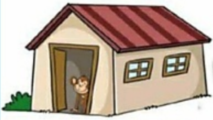
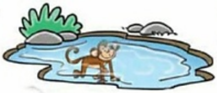
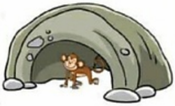

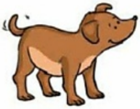
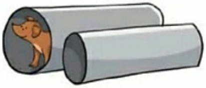
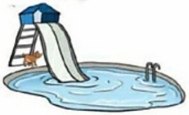
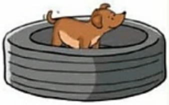

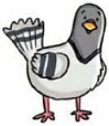
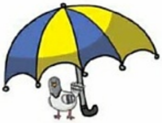
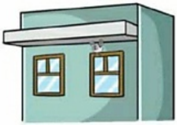
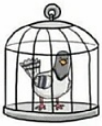

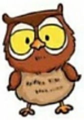
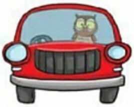
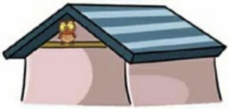
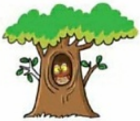

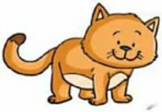
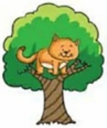
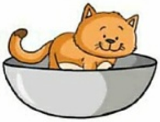
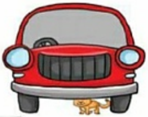

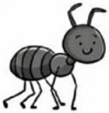
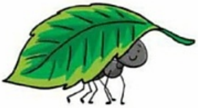
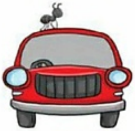
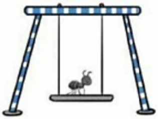

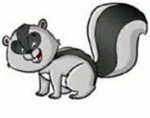
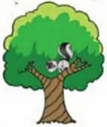
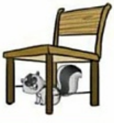
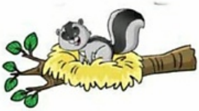

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

नए दोस्त का स्वागत

कहानी ● इलिका प्रिया

मानव का परिवार हाल में नए घर में शिफ्ट हुआ था. घर एक शांत इलाके में था. बाहर हरेभरे पेड़पौधे नजर आते थे. कुछ दूरी पर एक सुनसान सड़क थी, जहां से इक्कीदुक्की गाड़ियां ही गुजरती थीं. मानव को शांत माहौल काफी अच्छा लगता था, लेकिन पहली बार हकीकत में उसे यह मिला था. वह जहां रहता था, वहां उस के काफी सारे दोस्त थे, सामने मैदान में हर वक्त हलचल रहती थी, सड़क से गाड़ियों के हौर्न की आवाज हमेशा आती रहती थी, कुत्तेबिल्ली जैसे पालतू जानवर हमेशा दुम हिला कर उस के पीछेपीछे घूमते रहते थे.

यहां वैसा कुछ नहीं था और सब से बड़ी बात यह थी कि इस नई जगह पर उस का अभी तक एक भी दोस्त नहीं बना था. स्कूल भी बंद था इसलिए नए दोस्त होने के चांसेज भी कम थे. सुबह जब उस के मातापिता अपने औफिस के

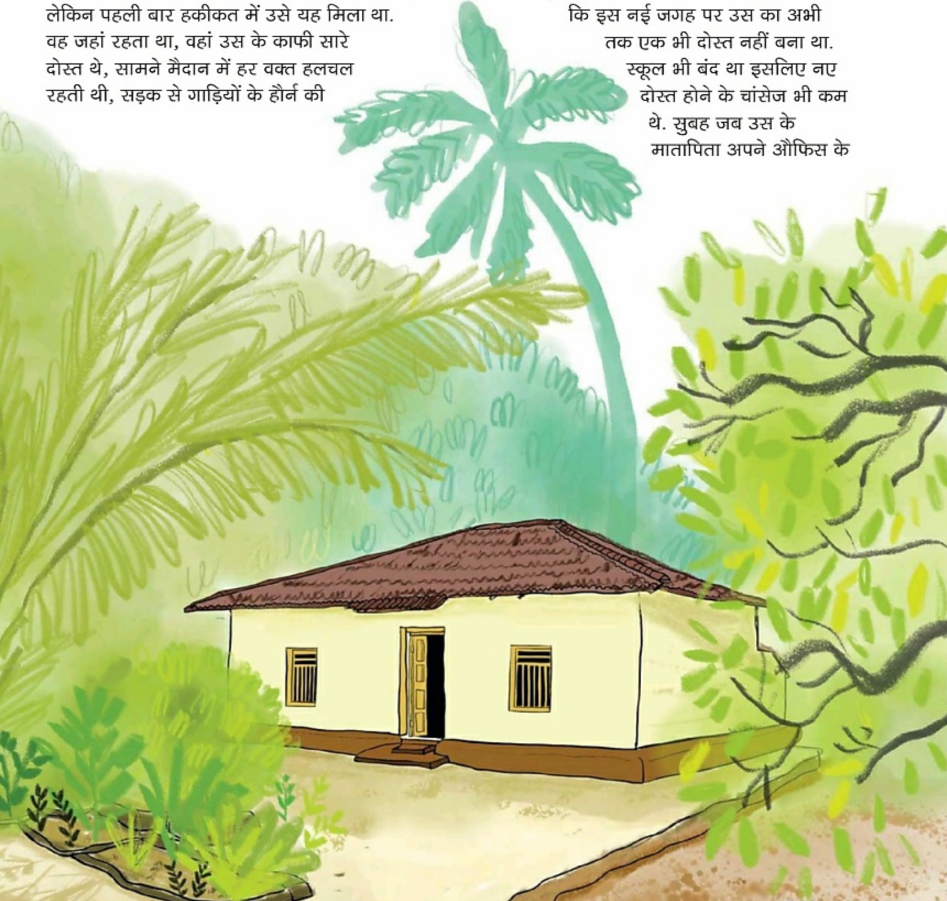

लिए निकले तो उन्होंने उसे दरवाजा अंदर से ठीक से लौक करने को कहा और यह भी बताया कि यदि कोई दरवाजा खटखटाए तो नाम पूछना और कह देना कि मम्मीपापा घर पर नहीं हैं. जरूरत पड़ने पर ही दरवाजा खोलना.

उसे उस दिन पहली बार इतनी सारी हिदायतें मिली थीं, सो मन में डर भी पैदा हो गया. मम्मीपापा के जाते ही उस ने ठीक से दरवाजा बंद कर लिया. अब उसे कोई खतरा नहीं था वह पलंग पर लेट गया और किताब पढ़ने लगा. वह किताब मन लगा कर नहीं पढ़ पाया. सन्नाटा उस के मन को व्याकुल कर रहा था. वहां बस घड़ी की टिकटिक की आवाज के सिवा और कोई हलचल न थी. उस ने अपना ध्यान पढ़ाई पर लगाने की कोशिश की. अभी वह सोच ही रहा था कि टकटक की एक अजीब सी आवाज सुनाई पड़ी.

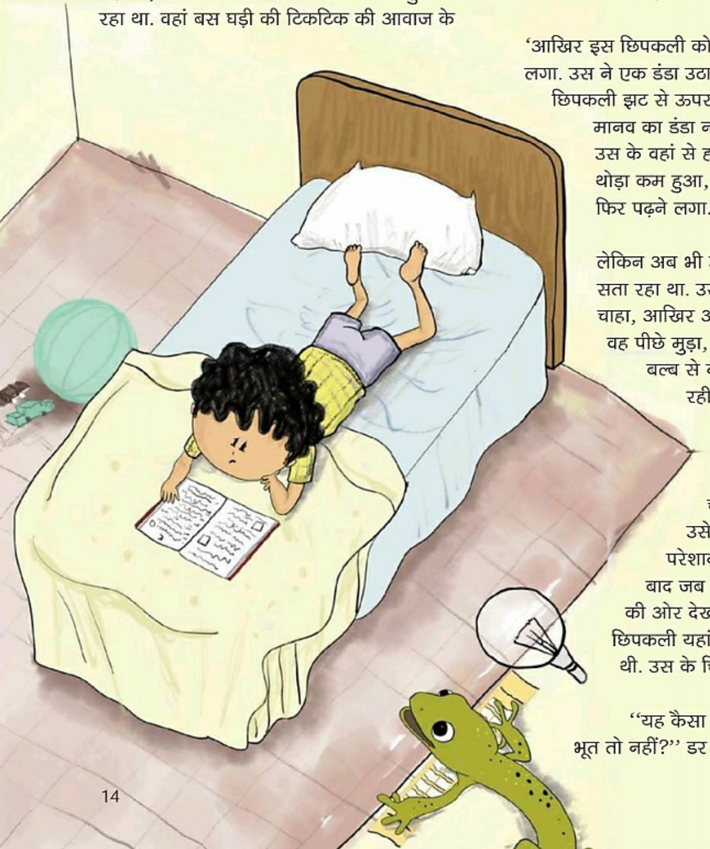

उस ने मुड़ कर बल्ब की ओर देखा. बल्ब के बगल में एक छिपकली टकटकी लगा कर उसे देख रही थी. यह उसी की आवाज थी.

''छिपकली?'' मानव ने मुंह बिचकाया. उसे जहां एक तरफ उस छिपकली पर गुस्सा आ रहा था तो उसे डर भी लग रहा था.

'आखिर इस छिपकली को कैसे भगाएं?' वह सोचने लगा. उस ने एक डंडा उठाया और दीवार पर पटका. छिपकली झट से ऊपर की ओर चढ़ गई. जहां मानव का डंडा नहीं पहुंच सकता था, पर उस के वहां से हट जाने पर मानव का डर थोड़ा कम हुआ, वह बिस्तर पर लेट कर फिर पढ़ने लगा.

लेकिन अब भी उसे छिपकली का डर सता रहा था. उस ने मुड़ कर उसे देखना चाहा, आखिर अभी वह कहां है? जैसे ही वह पीछे मुड़ा, एकदम उछल पड़ा. वह बल्ब से नीचे उतर कर उसे घूर रही है.

मानव डर गया और उठ कर दूसरे कमरे में चला गया. लेकिन अब भी उसे छिपकली वाली घटना परेशान कर रही थी. कुछ देर बाद जब उस ने उस कमरे के बल्ब की ओर देखा, तो वह चीख पड़ा. यह छिपकली यहां भी आ कर उसे घूर रही थी. उस के चिल्लाते ही वह भाग गई.

''यह कैसा घर है? यह छिपकली कहीं भूत तो नहीं?'' डर के मारे उस के रौंगटे खड़े

हो गए, लेकिन अगले ही पल उस ने खुद को शांत किया, वह जानता है. भूत वगैरह तो कुछ होता ही नहीं है.

शाम को जब मम्मीपापा वापस घर आए तो मानव को बड़ी राहत महसूस हुई. उस की मां ने आते ही पूछा, ''कोई आया तो नहीं था?''

मानव ने ना तो कह दिया, पर उसे छिपकली वाली बात याद आ रही थी.

उस ने मां से कहा, ''मां, मुझे छिपकली पसंद नहीं है और आज वह मेरे कमरे में आ गई?''

''अच्छा, तो छिपकली ने मेरे बेटे को तंग किया. हम उसे भगा देंगे,'' कहती हुई मां उठीं और फिर उस छिपकली को लंबे डंडे से बाहर खदेड़ दिया. अब मानव ने राहत की सांस ली. रात को जब वह खापी कर अपने कमरे में सोने गया तो दीवार पर नजर पड़ते ही वह उछल पड़ा, '' मम्मी, यह छिपकली फिर आ गई,'' उस ने मां को आवाज लगाई. मां ने जैसे ही डंडा उठाया वह भाग कर बाहर चली गई.

''देखा, अब वह डंडा देख कर ही भाग जाएगी,'' मां हंसती हुई बोलीं.

''वैसे बेटा, छिपकली से इतना नहीं डरते. वह भी इंसान के साथ रहना पसंद करती है इसलिए इंसान को देख कर आ जाती है. इस बेचारी को भी कितने दिनों से कोई नहीं मिला होगा. इसलिए तुम्हारे जैसे प्यारे बच्चे को देख कर यह दौड़ी चली आई है,'' पापा हंसते हुए बोले. मम्मीपापा की

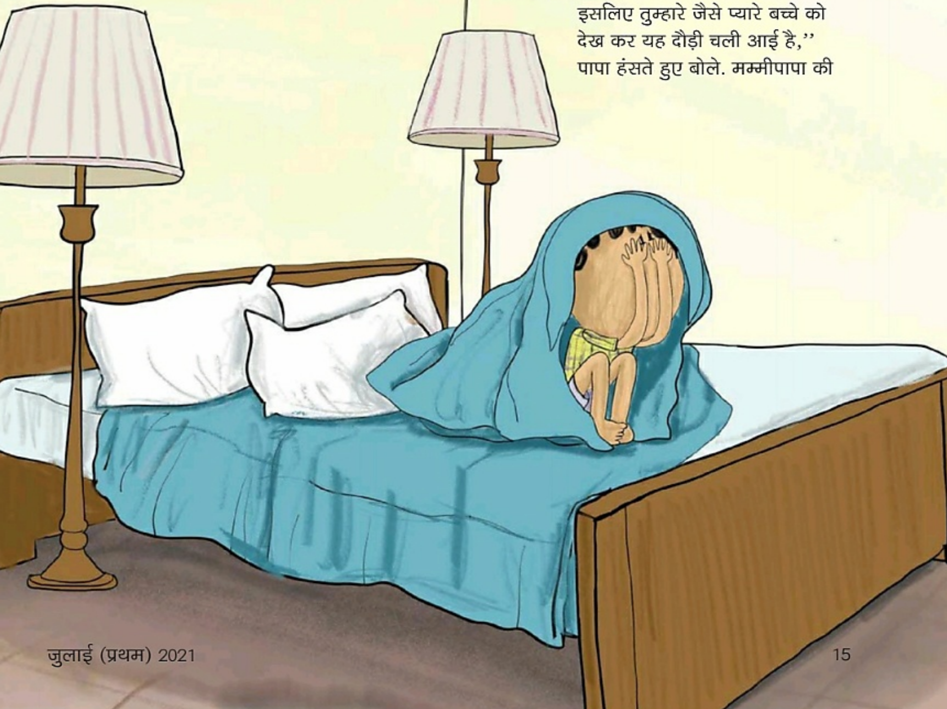

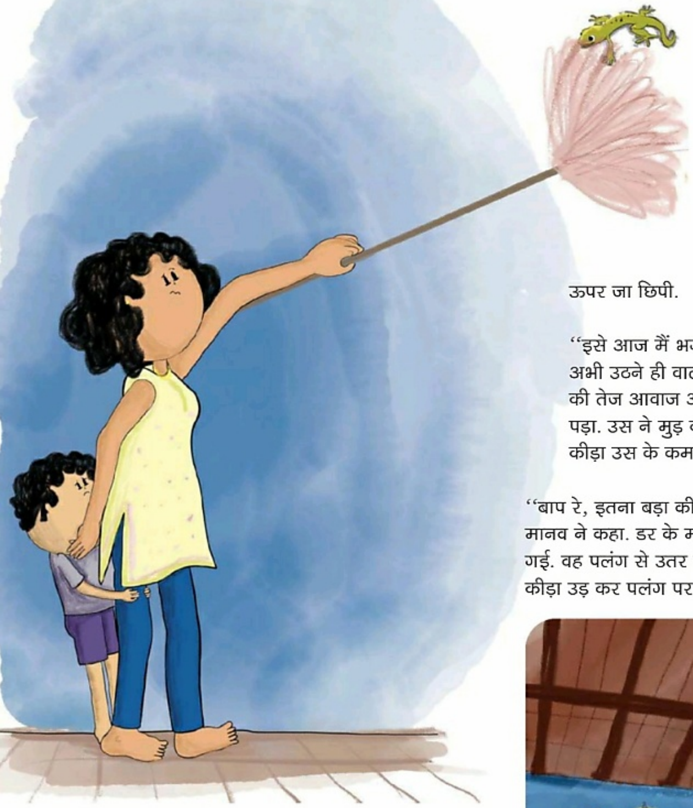

बात सुन कर मानव का डर जाता रहा.

अब वह छिपकली से डर तो नहीं रहा था, लेकिन उस का वहां रहना उसे अच्छा नहीं लगता था. छिपकली कई बार भगाने के बाद भी वापस आ जाती थी. जहां मानव रहता था, वह फिर उसी कमरे की दीवार पर आ कर बैठ जाती और लगातार उसे देखती रहती थी. मानव छिपकली भगाने के तरीके ढूंढ़ रहा था.

एक दिन उस ने अपने कमरे के खिड़कीदरवाजे अच्छी तरह बंद कर दिए, ताकि छिपकली अंदर कमरे में न आ सके. सब बंद कर के वह आराम से पलंग पर लेट कर किताब पढ़ने लगा. कुछ ही देर बाद जब उस ने मुआयने के लिए दीवार पर नजर दौड़ाई तो चीख पड़ा, “तुम फिर आ गई,” उस की चीख सुन कर छिपकली बल्ब के ऊपर जा छिपी.

“इसे आज मैं भगा कर ही दम लूंगा,” मानव अभी उठने ही वाला था कि जोर से भिनभिनाने की तेज आवाज आई, उसे सुन कर वह चौंक पड़ा. उस ने मुड़ कर देखा तो एक बड़ा सा कीड़ा उस के कमरे में उड़ रहा था.

“बाप रे, इतना बड़ा कीड़ा. यह तो काटने वाला है,” मानव ने कहा. डर के मारे उस की हालत खराब हो गई. वह पलंग से उतर कर भागना चाहता था, पर कीड़ा उड़ कर पलंग पर आ बैठा और अपनी लंबी

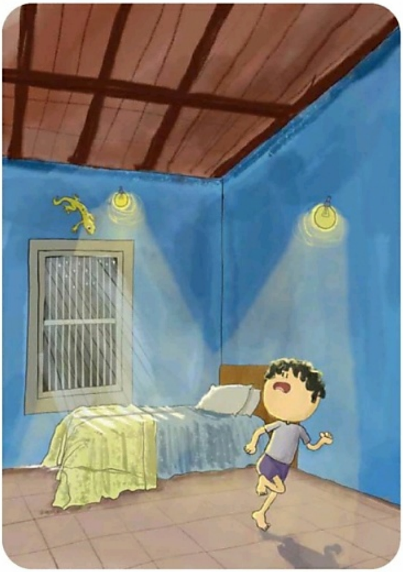

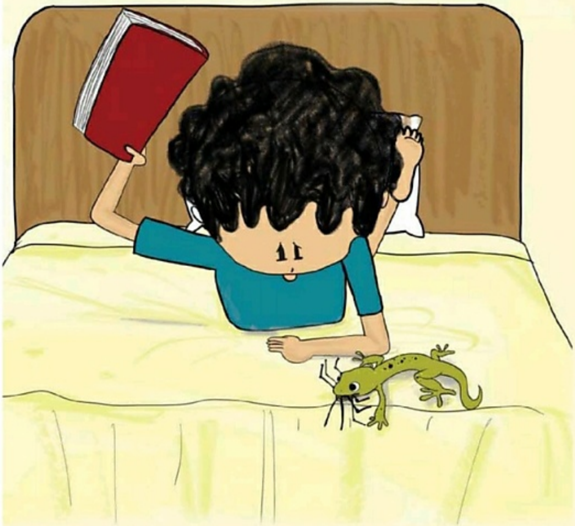

टांगों से चलते हुए मानव की ओर बढ़ने लगा. अभी मानव चीख पड़ता, उस से पहले ही छिपकली बिस्तर पर कूदी, उस ने कीड़े को धरदबोचा और तेजी से फिर से दीवार पर चढ़ गई. वह उसे पकड़े हुए कमरे से बाहर चली गई.

थोड़ी देर बाद छिपकली वापस आई तो उस के मुंह में कीड़ा नहीं था. वह फिर बल्ब के पास चिपक कर मानव को घूरने लगी.

अब मानव भी कृतज्ञता की भावना से भर गया. वह प्यार से हैरान हो कर उस की तरफ देखने लगा. उसे अब उस से गुस्सा या घृणा नहीं हुई.

आज रात मानव ने सारी बातें मम्मीपापा को बताईं.

''मां, मुझे अब पता चल गया, दोस्त सिर्फ कुत्तेबिल्ली ही नहीं, कोई भी जीव हो सकता है, जो दोस्ती करना चाहता है. छिपकली को हम सिर्फ भगाते हैं, पर मुझे लगता है हम उस से दोस्ती भी कर सकते हैं,'' मानव मासूमियत से बोला.

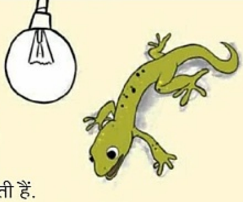

''बिलकुल बेटे, हर जीव में कुछ अच्छाइयां और कुछ बुराइयां होती हैं. अगर हम किसी से दोस्ती करते हैं तो उन्हें अच्छी बातें सिखा कर हम बुराई खत्म कर सकते हैं. उन्हें खतरे से बचने के गुण सिखा कर नुकसान से बचाव भी कर सकते हैं. फिर तुम्हारी छिपकली दोस्त तो बस दीवार पर चिपक कर तुम्हें देखना पसंद करती है,'' इतना कह कर मां मुसकराईं.

मानव अब खुश था. उसे यहां भी एक नया दोस्त मिल गया था. छोटी, बेजुबान पर प्यारी, जिस के लिए अब उस ने कुछ छिपकलियों के चित्र बना कर दीवार पर चिपका दिए थे. उसे नए दोस्त का स्वागत जो करना था. ●

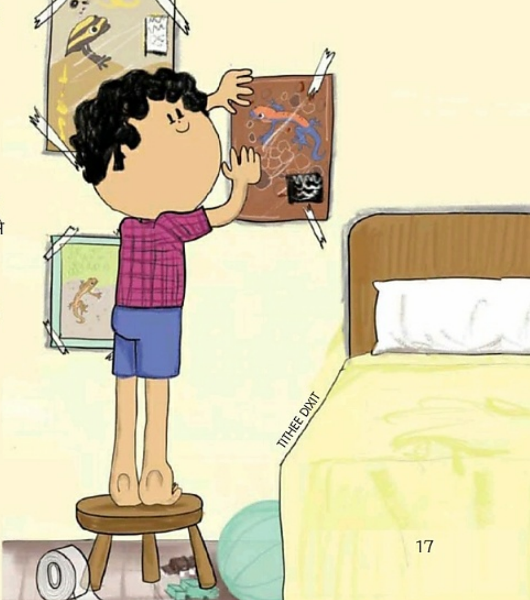

बताओ तो जानें

1. जमीन पर गिरते ही
निश्चित है टूट जाऊंगा
मुझे देख मुसकराया तो
मैं भी मुसकराता मिलूंगा.

2. मुझे चक्कर खाना पसंद है
लेकिन मेरे सिर को ऊपर रखना
जब मैं अंदर चला गया तो
सबकुछ सख्त हो जाएगा.

3. मेरा पड़ोसी गलती करे
तो तुम परेशानी में होते हो
लेकिन मैं छुटकारा दिला कर
लिखावट साफ बनाता हूं.

4. छोटी सी डब्बी के अंदर
बहुतेरे हैं मेरे भाईबहन
एक निकालो सिर को रगड़ो
झट से कुछ भी जला लो.

देखें तुम कितना जानते हो

1. देश में सब से लंबा समुद्र तटीय क्षेत्र किस राज्य में है?
   - (क) महाराष्ट्र
   - (ख) तमिलनाडु
   - (ग) आंध्र प्रदेश
   - (घ) गुजरात

2. भारत ने अपना सब से पहला क्रिकेट टेस्ट मैच कब खेला था?
   - (क) 1922
   - (ख) 1932
   - (ग) 1942
   - (घ) 1952

3. किरण बेदी कौन हैं?
   - (क) प्रथम महिला आईएएस औफिसर
   - (ख) प्रथम महिला एडवोकेट
   - (ग) प्रथम महिला आईपीएस औफिसर
   - (घ) प्रथम महिला जज

4. न्यूमिस्मैटिक्स क्या है?
   - (क) सिक्कों का अध्ययन
   - (ख) अंकों का अध्ययन
   - (ग) स्टैंप्स का अध्ययन
   - (घ) अंतरिक्ष का अध्ययन

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–आईना, 2–स्क्रू, 3–इरेजर, 4–मैचस्टिक.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–घ, 2–ख, 3–ग, 4–क.

मजेदार विज्ञान

आइस से पानी गरम करें

आइए, जानते हैं कि गरम और ठंडा कैसे प्रतिक्रिया करते हैं.

आप को चाहिए :

- शीशे की बोतल ढक्कन सहित
- आइस क्यूब्स
- उबला हुआ पानी.

ऐसा करें :

1. एक वयस्क से कहें कि शीशे की बोतल में उबला पानी आधा भरें.

2. बोतल के ढक्कन को जब आप सख्ती से बंद कर देंगे तो देखेंगे कि बोतल के मुंह से भाप बाहर निकल रहा है. किसी वयस्क से कहें कि समतल सतह पर बोतल को उलटा कर के रख दें.

3. बोतल के तल पर एक आइसक्यूब रख दें, जो अभी उलटी रखी है.

देखें :

एक बार जब आप बोतल पर आइस को रख देते हैं, तो अंदर का पानी बुलबुले छोड़ने लगता है.

सोचें :

आइस से पानी कैसे उबलने लगता है?

पानी के उबलने का बिंदु यानी क्वथनांक तापमान और वायुदाब पर निर्भर करता है. सीलेवल यानी स्टैंडर्ड समुद्र तल दबाव पर पानी 100 डिग्री सेंटीग्रेट पर उबलता है. यह बदल सकता है अगर वायुदाब बदल जाए. उदाहरण के लिए अगर आप पहाड़ के ऊपर जाते हैं और पानी उबालने की कोशिश करते हैं, तो चूंकि वायुदाब कम है, इसलिए वह तापमान जिस पर पानी उबलता है, वह भी कम हो जाता है. सामान्यतया जब पानी उबलता है, तो बुलबुले बनते हैं. यह बुलबुला हवा नहीं है, यह पानी है जो तरल गैस में बदल गया है और वही भाप बुलबुले के रूप में सतह पर तैरता है. हमारे इस प्रयोग में जब हम पानी को उबालना बंद कर देते हैं और इसे बोतल में डाल देते हैं तो हम भाप को ठंडा होने के लिए छोड़ते हैं और यह सघन यानी द्रव में बदलने लगता है तथा इस काम में यह वायुदाब को गिराता जाता है. अब ग्लास के बोतल के अंदर का वायुदाब बाहर के वायुदाब से कम हो जाता है, इसलिए यह ठीक उसी तरह प्रतिक्रिया देता है जैसा कि पहाड़ के ऊपर का पानी देता है. चूंकि दबाव कम हो गया है इसलिए उबलने की यानी क्वथनांक बिंदु भी कम हो गया है. जब हम आइसक्यूब को भी इस काम में शामिल कर देते हैं तो हम उस दाब से भी और ज्यादा दबाव को कम कर देते हैं जिस दाब पर पानी का भाप द्रव बनने लगता है. अब चूंकि क्वथनांक आगे कम ही होता जाता है इसलिए पानी फिर से उबलने लगता है जबकि हम कोई अलग से इस में गरमी भी नहीं लगाते. दूसरे शब्दों में हम पानी को ट्रिक द्वारा उबाल सकते हैं और ऐसा हम ने दबाव को घटा कर तापमान को कम कर के किया जब हम ने आइसक्यूब को बोतल के ऊपर रख दिया था.

पता करें :

एक प्रेशर कुकर तेजी से खाना कैसे पकाता है?

एक प्रेशर कुकर अपने अंदर वातावरणीय दाब को बढ़ा कर जल्दी से खाना पकाता है. जब कूकर के अंदर का दबाव उच्च होता है तो वह पानी के उबलने की बिंदु को ऊंचा कर देता है और ज्यादा भाप बनती है. इस तरीके से खाना ज्यादा तेजी से पकने लगता है क्योंकि पानी वास्तव में बहुत ज्यादा गरम हो जाता है और पानी के भाप बनने और भाग जाने के पहले ही यह को पका देता है.

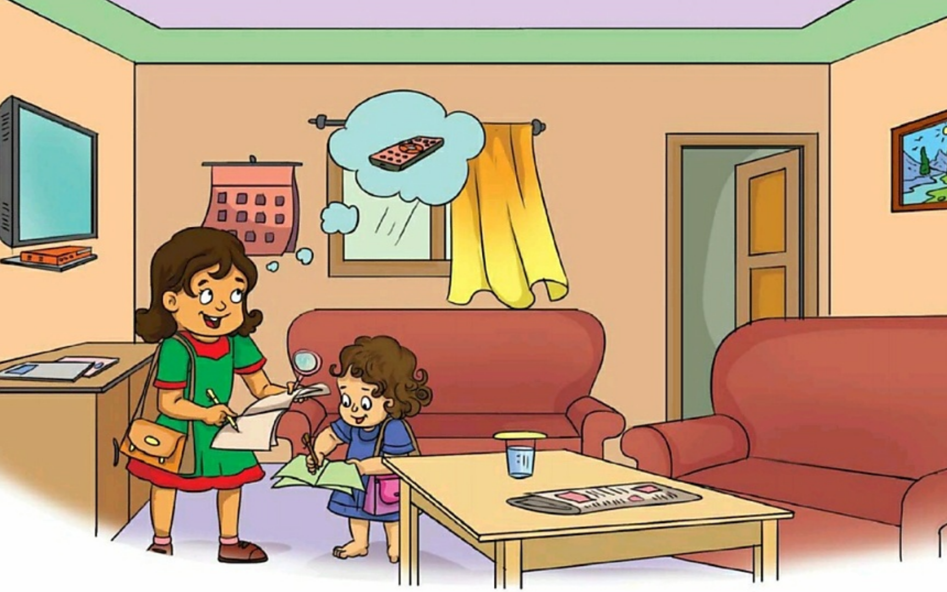

सब से अच्छा दिन

कहानी ● तुलिका प्रशांत

‘‘टीवी का रिमोट कहां है?’’ पापा ने नैना से पूछा.

‘‘टीवी का रिमोट कहां है?’’ नैना ने इस के बाद निम्मी से पूछा.

नैना और निम्मी दोनों बहनें थीं. नैना 7 साल की और निम्मी 2 साल की थी. निम्मी को रिमोट के बारे में कुछ भी याद नहीं था. उन्होंने सोफे के नीचे देखा तो उन्हें लाल रंग के क्रेयोन मिले, लेकिन रिमोट नहीं मिला. उन्होंने टीवी के नीचे तलाशा तो उन्हें बार्बी के खोए जूते मिले, लेकिन रिमोट नहीं मिला. उन्होंने डाइनिंग टेबल के नीचे ढूंढ़ा और उन्हें फायरट्रक के पहिए मिल गए, लेकिन अब भी रिमोट नहीं मिला.

उन्होंने किचन की ड्राअर वाली अलमारी, पापा की टेबल, स्टैशनरी के ड्राअर, तकिए के नीचे, प्रिंटर के ऊपर, खिलौनों की बास्केट के अंदर और ट्रायसाइकिल के स्टोरेज के अंदर ढूंढ़ा. उन्हें इस तलाशी में ये सभी चीजें क्रम से मिलती चली गईं जो कई दिन पहले खो गई थी, जैसे मम्मी का मोबाइल चार्जर, टूथपेस्ट की एक ट्यूब, कार की चाबी, एक स्पैचुला, नैना की साइंस नोटबुक, निम्मी के एक जोड़ी जुराब और एक हैडफोन.

खोजबीन सही तरीके से नहीं चल रही थी, इसलिए नैना को एक आइडिया सूझा, एक जासूस की तरह ढूंढ़ने का. उस ने अपने बैग में एक नोटबुक, एक कलम और जासूसी लैंस यानी लुकिंग ग्लास डाल कर इसे तैयार कर लिया. उस ने अपनी नोटबुक

निकाली और संकेतों को लिखना शुरू कर दिया. उस की नकल उतारते हुए निम्मी भी अपना बैग, एक नोटबुक और एक पैंसिल ले आई तथा उस ने लिखना शुरू कर दिया.

नैना ने अपनी नोटबुक में लिखा :

प्र. रिमोट खोने के पहले टीवी कौन देख रहा था?
उ. निम्मी.

प्र. टीवी देखने के बाद उस ने क्या किया?
उ. खिलौनों के साथ खेलने लगी.

प्र. उस ने खिलौने कहां से निकाले?
उ. खिलौने वाले कमरे से.

वू...हू... उसे संकेत मिल गया. रिमोट खिलौने वाले कमरे में ही होना चाहिए. ''खुश हो कर नैना ने खिलौने वाले कमरे की सभी सैल्फों और खिलौने के हरेक स्टोर को खंगालना शुरू कर दिया. निम्मी भी उस के साथ लगी रही, लेकिन रिमोट फिर भी उन्हें कहीं नहीं मिला. इस से वे दुखी हो गए. अब तक दोपहर हो गई थी. वे निराश हो कर थक गए थे. इसलिए लंच के बाद उन्होंने लिविंगरूम के अंदर एक कैंप बनाने का फैसला किया.

नैना ने 4 कुरसियों से एक वर्गाकार एरिया बनाया और उस के बाद बेडशीट्स और क्लौथक्लिप्स के इस्तेमाल से एक बहुत ही खूबसूरत टैंट बना लिया. टैंट के अंदर उन्होंने एक कहानी की किताब पढ़ी, कार और इंजन से खेला तथा कुछ चित्रांकन वगैरा किया.

वहां काफी देर खेलने के बाद, उन्होंने खेल को बदलने का निर्णय किया. उन्होंने डाइनिंग टेबल के निकट कुरसियों को वापस रख दिया और लिविंगरूम के फर्श पर पीली और नीली शीट्स के उपयोग से समुद्र के किनारे जैसी एक बीच यानी रेतीला तट बनाया. नैना ने पीली शीट्स के ऊपर दो छत्तरियां लगा दीं. उस ने कार्डबोर्ड से शार्क के पंख भी बना डाले और उन्हें नीली शीट्स पर लगा दिया.

'यह अभी भी अधूरा जान पड़ता है,' नैना ने सोचा.

वह कुछ सीपियां लाई और उन्हें शीट्स के ऊपर सजा दिया. आखिर बीच बन कर तैयार था.

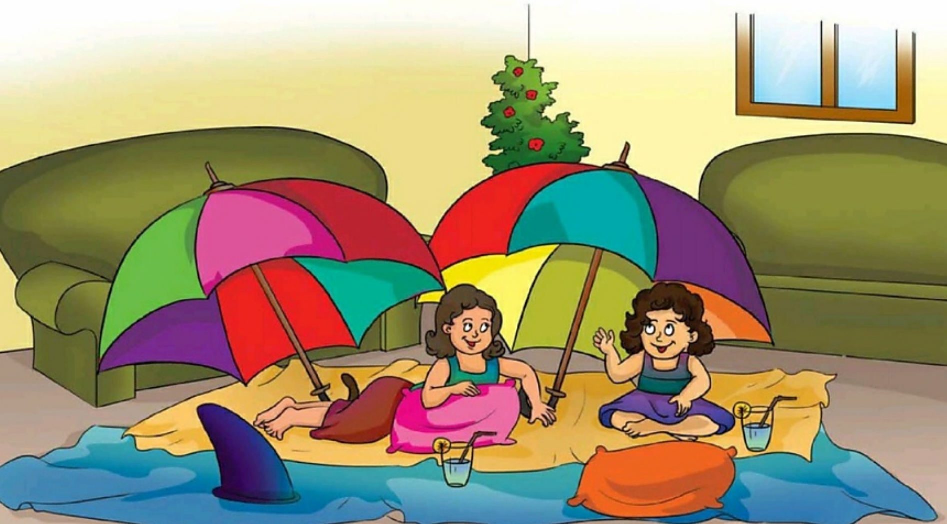

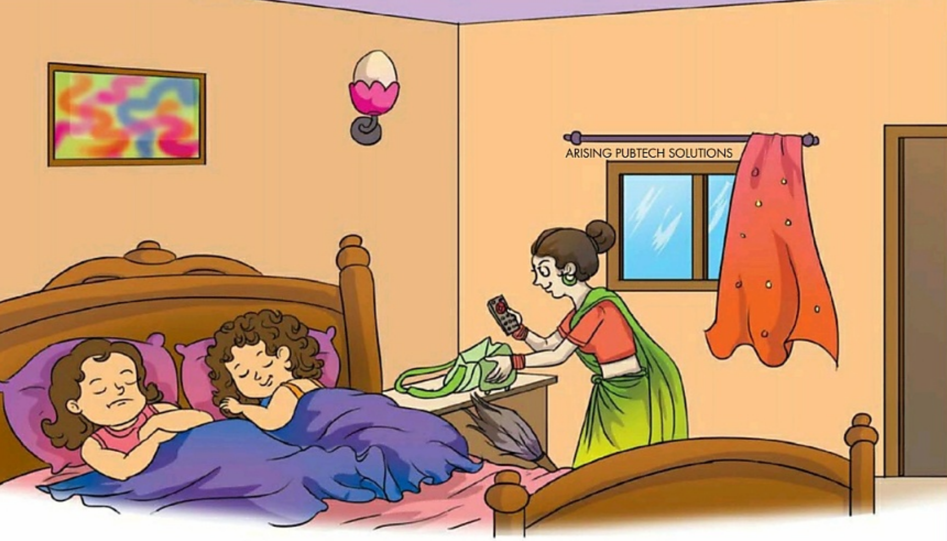

''हुम्म...अब यह सही दिखाई दे रहा है,'' नैना ने खुश हो कर कहा. ''लेकिन अभी भी कुछ छूट गया लगता है... हां, नीबू का शर्बत.''

उस ने नीबू के शर्बत के दो गिलास तैयार किए. नैना और निम्मी ने खुशी से ठंडा और स्वादिष्ठ शर्बत पी कर ऐंजौय किया और कुछ देर तक बीच जिसे उन्होंने बनाया था, पर खेला.

''बहुत गरमी हो रही है. चलो, हम नदी में तैरने चलते हैं,'' नैना ने निम्मी से कहा. ''अरे नहीं, वहां तो शार्क हैं. इसलिए वहां तैरना जाना बहुत खतरनाक साबित होगा.''

उस के बाद उन्होंने नीली शीट से शार्क के पंखों को हटा दिया और उस के बाद लंबे समय तक तैराकी कर ऐंजौय किया.

लेकिन तभी उन के बाहर जा कर खेलने का समय हो गया था. इसलिए वे साफसफाई करने के बाद बाहर खेलने चले गए. वहां वे कूदे, टहले, दौड़े और फुदके तथा उस के बाद अपने घर वापस आ गए.

अब डिनर का समय हो गया था. वे सब के सब, पापा, मम्मी, नैना और निम्मी एकसाथ मिल कर शानदार डिनर करने लगे. सारा दिन खेलते रहने के कारण नैना और निम्मी बहुत ही थक गए थे, इसलिए वे सोने चले गए.

''आज का दिन सब से अच्छा रहा,'' ऊंघते नैना ने कहा.

''आज का दिन सब से अच्छा रहा,'' निम्मी उस से भी ज्यादा ऊंघते हुए बोली और उस के बाद दोनों सो गए.

उन के जासूसी बैग अभी भी खिलौने वाले कमरे में पड़े हुए थे. इसलिए मम्मी ने निर्णय किया कि बैग शैल्फ पर वापस रख दें.

अन्य दिनों की अपेक्षा निम्मी का बैग आज कुछ ज्यादा ही भारी था. मम्मी ने बैग खोला देखा तो उस के अंदर उन्हें टीवी का रिमोट पड़ा दिखा. रिमोट दिन भर बैग के अंदर ही पड़ा रहा और बच्चे उसे बाहर ढूंढ़ते रह गए थे. ●

छिपे चित्र ढूंढ़ें

मानसून आ चुका है. इस मौसम से संबंधित 10 चीजों को ढूंढ़ें.

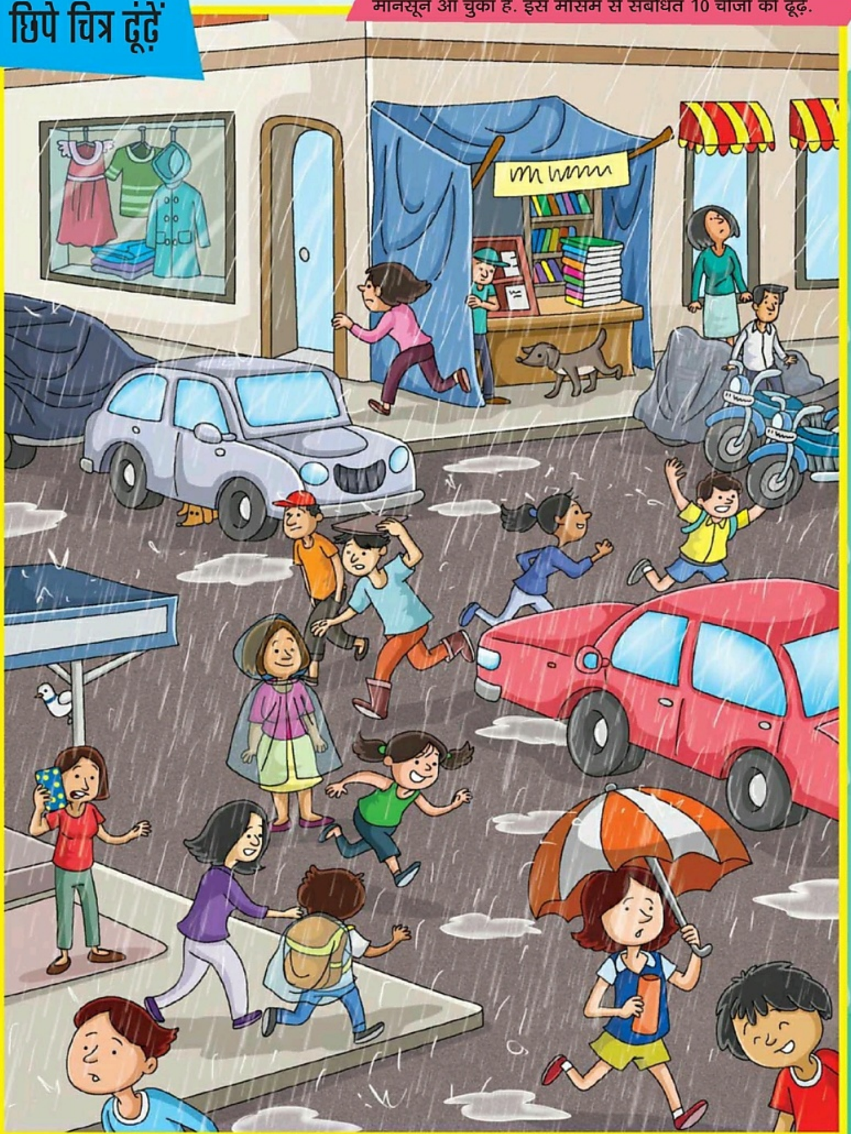

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बोर्ड गेम खेलें

इस फन गेम यानी मजेदार खेल में इन मानसून जीवों के साथ शामिल होइए.

खिलाड़ी : 2 या अधिक

आप को चाहिए : डाइस, गोटी, नोटबुक और पैंसिल.

निर्देश :

- डाइस को फेंकें और आगे की ओर बढ़ें. हरेक टाइल पर ऐक्शन लिखते चलें.
- अगर आप एक मेढक पर लैंड करते हैं तो एक कदम आगे बढ़ें.
- अगर आप एक केंचुए पर लैंड करते हैं तो अपनी बारी खोते हैं.
- अगर आप एक ग्रासहूपर यानी टिड्डे पर लैंड करते हैं तो 3 कदम आगे उड़ान भरें.
- अगर आप एक ड्रैगनफ्लाई पर लैंड करते हैं तो 2 कदम पीछे लौटें.

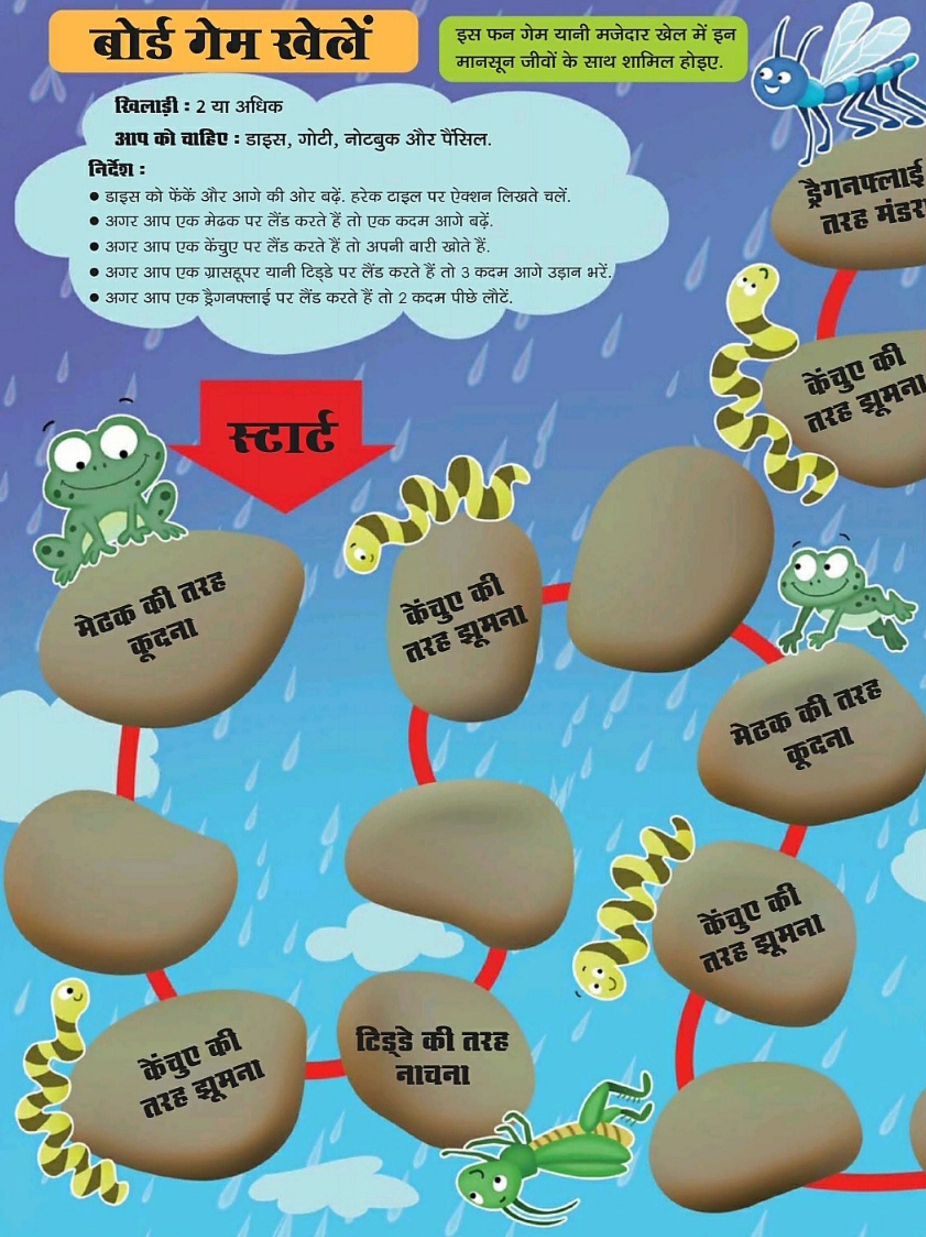
स्टार्ट
मेढक की तरह कूदना
केंचुए की तरह झूमना
टिड्डे की तरह नाचना
केंचुए की तरह झूमना
मेढक की तरह कूदना
केंचुए की तरह झूमना
केंचुए की तरह झूमना
ड्रैगनफ्लाई
तरह मंडरा

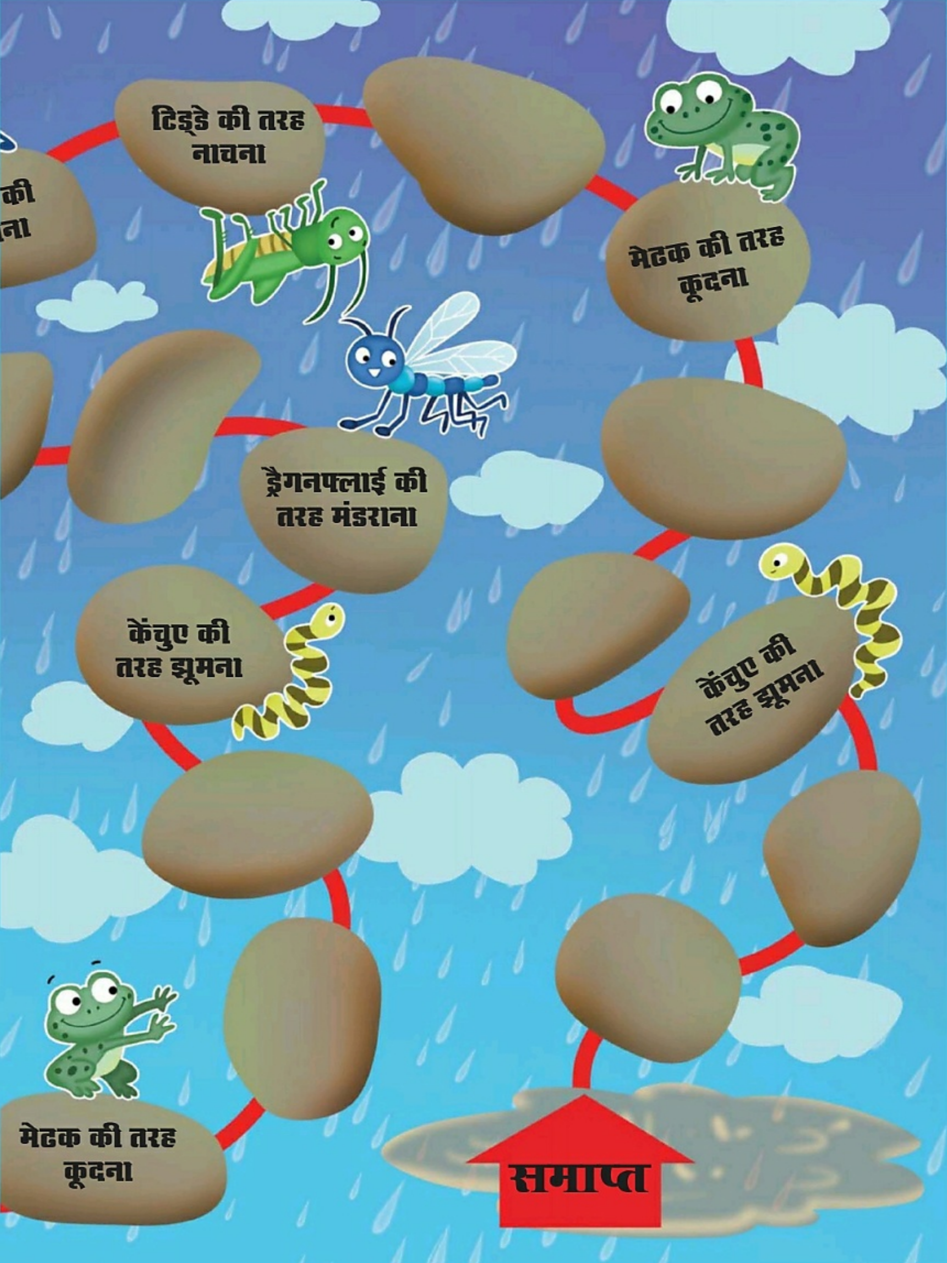
की
ना
टिड्डे की तरह नाचना
मेढक की तरह कूदना
ड्रैगनफ्लाई की तरह मंडराना
केंचुए की तरह झूमना
केंचुए की तरह झूमना
मेढक की तरह कूदना
समाप्त

चीकू

चित्रकथा : दास

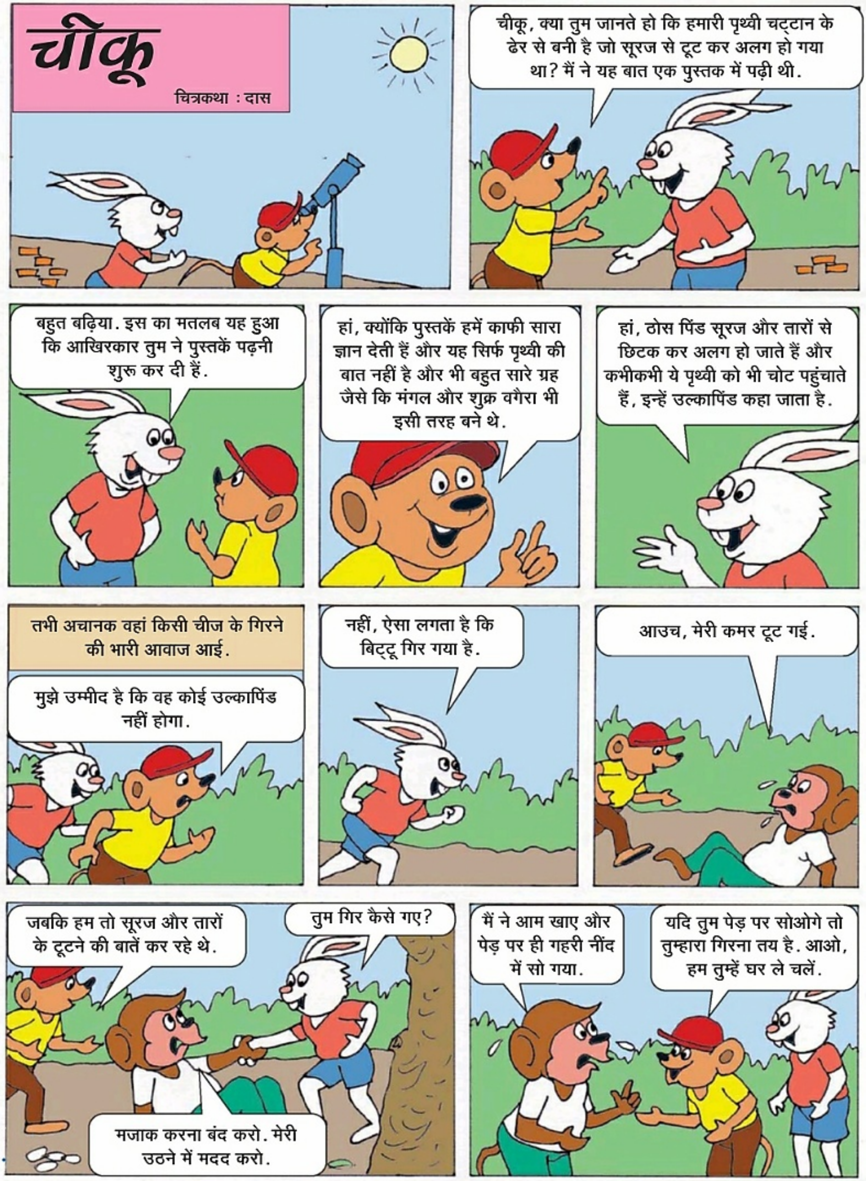
चीकू, क्या तुम जानते हो कि हमारी पृथ्वी चट्टान के ढेर से बनी है जो सूरज से टूट कर अलग हो गया था? मैं ने यह बात एक पुस्तक में पढ़ी थी.
बहुत बढ़िया. इस का मतलब यह हुआ कि आखिरकार तुम ने पुस्तकें पढ़नी शुरू कर दी हैं.
हां, क्योंकि पुस्तकें हमें काफी सारा ज्ञान देती हैं और यह सिर्फ पृथ्वी की बात नहीं है और भी बहुत सारे ग्रह जैसे कि मंगल और शुक्र वगैरा भी इसी तरह बने थे.
हां, ठोस पिंड सूरज और तारों से छिटक कर अलग हो जाते हैं और कभीकभी ये पृथ्वी को भी चोट पहुंचाते हैं, इन्हें उल्कापिंड कहा जाता है.
तभी अचानक वहां किसी चीज के गिरने की भारी आवाज आई.
मुझे उम्मीद है कि वह कोई उल्कापिंड नहीं होगा.
नहीं, ऐसा लगता है कि बिट्टू गिर गया है.
आउच, मेरी कमर टूट गई.
जबकि हम तो सूरज और तारों के टूटने की बातें कर रहे थे.
तुम गिर कैसे गए?
मजाक करना बंद करो. मेरी उठने में मदद करो.
मैं ने आम खाए और पेड़ पर ही गहरी नींद में सो गया.
यदि तुम पेड़ पर सोओगे तो तुम्हारा गिरना तय है. आओ, हम तुम्हें घर ले चलें.

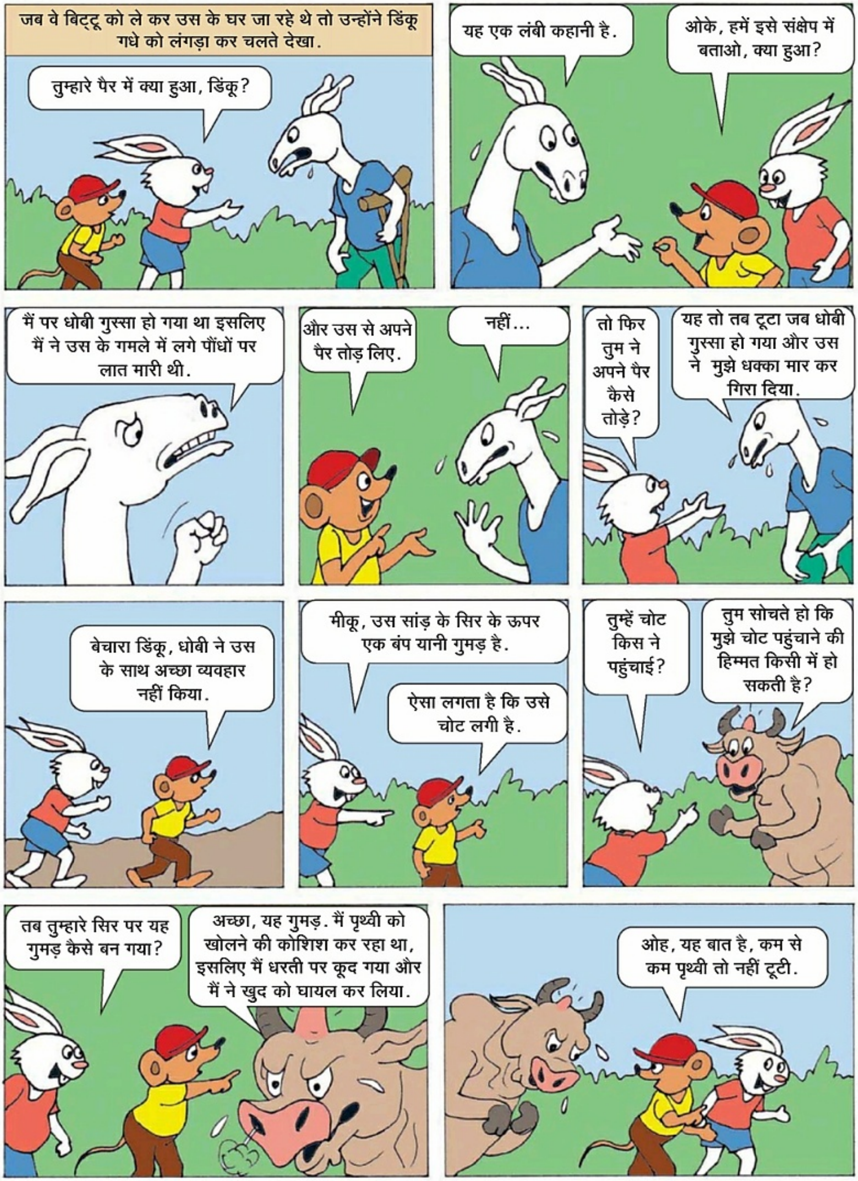
जब वे बिट्टू को ले कर उस के घर जा रहे थे तो उन्होंने डिंकू गधे को लंगड़ा कर चलते देखा.
तुम्हारे पैर में क्या हुआ, डिंकू?
यह एक लंबी कहानी है.
ओके, हमें इसे संक्षेप में बताओ, क्या हुआ?
मैं पर धोबी गुस्सा हो गया था इसलिए मैं ने उस के गमले में लगे पौंधों पर लात मारी थी.
और उस से अपने पैर तोड़ लिए.
नहीं...
तो फिर तुम ने अपने पैर कैसे तोड़े?
यह तो तब टूटा जब धोबी गुस्सा हो गया और उस ने मुझे धक्का मार कर गिरा दिया.
बेचारा डिंकू, धोबी ने उस के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया.
मीकू, उस सांड़ के सिर के ऊपर एक बंप यानी गुमड़ है.
ऐसा लगता है कि उसे चोट लगी है.
तुम्हें चोट किस ने पहुंचाई?
तुम सोचते हो कि मुझे चोट पहुंचाने की हिम्मत किसी में हो सकती है?
तब तुम्हारे सिर पर यह गुमड़ कैसे बन गया?
अच्छा, यह गुमड़. मैं पृथ्वी को खोलने की कोशिश कर रहा था, इसलिए मैं धरती पर कूद गया और मैं ने खुद को घायल कर लिया.
ओह, यह बात है, कम से कम पृथ्वी तो नहीं टूटी.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

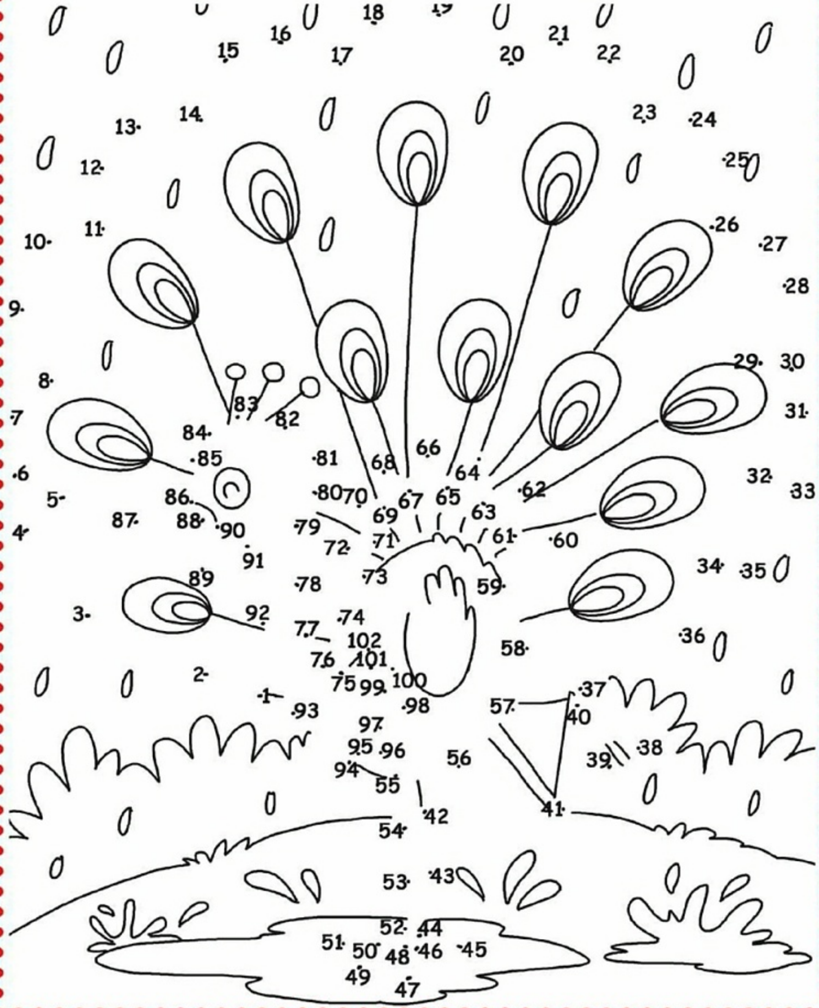
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102

गुप्त सुरंग

कहानी ● रेहान शेख

सोमवार का दिन हमेशा ही चिढ़ाने वाला होता है. ऐसा ही हंसिका के लिए भी था, जो एक छोटी सी लड़की थी, वह कक्षा 5वीं में पढ़ती थी और देहरादून की रहने वाली थी. अन्य लड़कियों की तरह वह भी स्कूल जाना पसंद नहीं करती थी, लेकिन वह कर भी क्या सकती थी, उस के मम्मीपापा उस की जरा भी नहीं सुनते थे.

''ओके, मैं तुम्हारे पापा से कहूंगी कि तुम्हारे लिए आसपास ही कहीं एक चाय की दुकान खोल दें. कोई समस्या नहीं है, मत जाओ स्कूल,'' यह साधारण सा वाक्य उसे डरा दिया करता और वह उठ खड़ी होती. हंसिका का स्कूल जाने का एकमात्र कारण उस के दोस्त और लंचब्रेक था, क्योंकि लंचब्रेक ही ऐसा समय होता था जब छात्रों को स्कूल के ग्राउंड में जाने और खेलने की अनुमति होती थी.

''आज हम क्या खेलेंगे, हंसिका?'' हंसिका के दोस्त मोहित ने पूछा.

''आज हम लुकाछिपी खेलेंगे.''

''हां, यह सब से अच्छा रहेगा. यहांवहां छिपने के लिए बहुत से स्थान हैं. यह निश्चय ही सब से बढ़िया खेल होगा,'' टीना ने उत्साहित होते हुए कहा.

खेल और पारी का निर्णय कर लिया गया. हंसिका और टीना छिपने चले गए, जबकि मोहित को उन्हें ढूंढ़ने का काम दिया गया जो कठिन के साथसाथ मजेदार भी था.

''एक दो...तीन...चार...पांच...छह'' मोहित गिनती गिन रहा था जब तक कि पीछे से दौड़ती हुई हंसिका उस से टकरा नहीं गई जहां वह दीवार पर सिर झुकाए खड़ा था.

''क्या हुआ हंसिका? तुम ने मुझे धक्का क्यों दिया?'' मोहित गुस्सा हो गया क्योंकि उस ने उसे चोट पहुंचाई थी. जब टीना ने हंसिका को मोहित की ओर दौड़ते हुए देखा, तो वह भी उस ओर दौड़ी ताकि देख सके कि क्या मामला है?

''क्या हुआ?'' टीना ने हंसिका से पूछा.

हंसिका की आंखें बड़ीबड़ी खुल गई थीं, वह आश्चर्यचकित थी और उस ने आनंद से भर कर कहा, ''मेरे साथ आओ दोस्तो, मैं तुम सभी को कुछ मजेदार चीज दिखाऊंगी.''

सब के सब यह जानने के लिए उत्सुक थे कि आखिर आश्चर्य की बात क्या थी. सभी एक लाइन में खड़े हो गए और हंसिका के पीछेपीछे चलने लगे, हंसिका उन का नेतृत्व कर रही थी. तीनों बच्चे कल्पना की दुनिया में विचरण कर रहे थे.

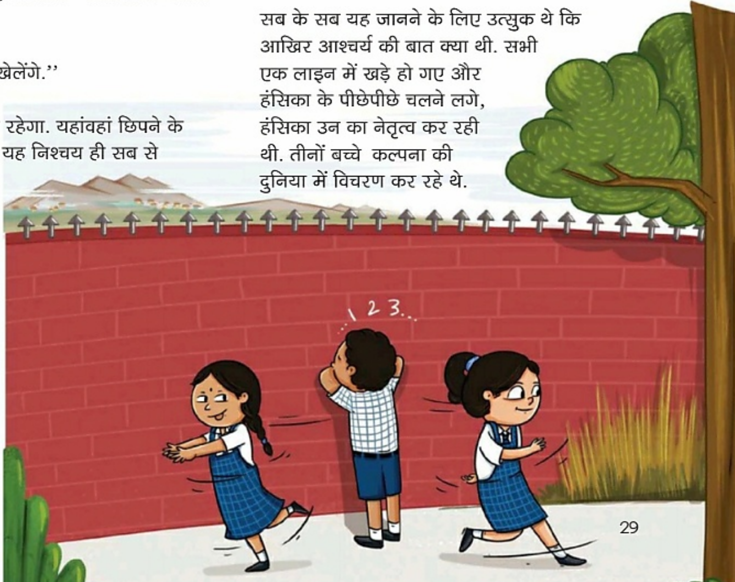

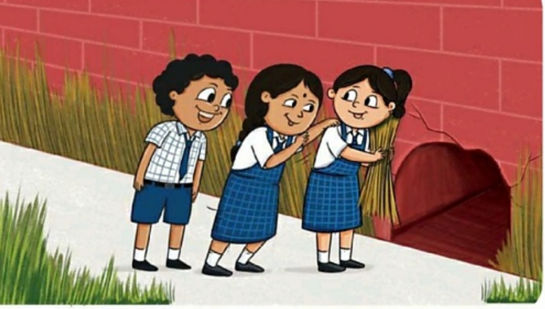

टीना ने अल्लादीन के जादुई चिराग के बारे में सोचा जबकि मोहित ने एक एलियन के बारे में सोचा जिस के लंबे हाथ थे, पतला चमकदार हरे रंग का शरीर था, बड़े से अंडे की तरह सिर था और उभरी हुई बड़ीबड़ी आंखें जिन के यूएफओ का ईंधन शायद समाप्त हो गया था.

''यहां देखो,'' सभी हंसिका के कंधों पर झुक गए ताकि देख सकें कि वहां क्या था. लेकिन वे वहां पर स्कूल की बाउंड्रीवाल के अलावा कुछ नहीं देख सके, पास में एक बड़ा सा पेड़ खड़ा था और कुछ झाड़ियां और सूखी घास थी, जो काफी लंबीलंबी थी.

''मैं कुछ भी नहीं देख सकती हूं, हंसिका,'' टीना ने कहा.

जब हंसिका ने घास और झाड़ियों को हटाना शुरू किया तो कम ऊंचाई पर एक सुरंग को देख कर बच्चे हैरान रह गए. उन के मुंह खुले के खुले रह गए और उन की आंखें हैरानी से चौड़ी हो गईं.

''चलो, इस सुरंग में चलते हैं, क्या विचार है?'' मोहित सुरंग के अंदर देखने की अपनी उत्सुकता पर नियंत्रण नहीं रख सका कि उस के अंदर क्या है?

''लेकिन लंचब्रेक जैसा कि मैं सोचती हूं, जल्दी ही समाप्त होने वाला है,'' टीना ने मोहित और हंसिका को याद दिलाया.

''हम लोग कल लंचब्रेक के शुरुआती समय में ही सुरंग के अंदर जाएंगे. मैं समझती हूं कि यह किसी भी तरह ज्यादा गहरी नहीं होगी,'' हंसिका ने बताया. जैसे ही सब ने सहमति में सिर हिलाया, घंटी बज गई और छात्र अपनेअपने क्लासरूम की ओर तेजी से भागे.

हंसिका पूरी रात सो नहीं सकी क्योंकि उस की उत्सुकता उसे परेशान करती रही. जैसे ही सुबह की रोशनी फूटी, हंसिका अपने मम्मीपापा के कमरे की ओर भागी. अभी सुबह के 5 बजे थे. जब वह कमरे में गई तो देखा कि वे गहरी नींद में सो रहे हैं. उस के पापा इतनी जोर से खर्राटे ले रहे थे कि हंसिका ने सोचा कि भूकंप से पहले कुछ सुरक्षा उपाय उसे अपनाने चाहिए, क्योंकि उन के खर्राटे इतने तेज थे जो पूरे घर में कंपन ला रहे थे. उस ने मम्मी की पीठ पर हल्की सी थपकी मारी.

''क्या हुआ हंसिका?'' वे पहले से ही तनाव में दिख रही थीं.

''मम्मी, क्या आज मुझे स्कूल नहीं जाना?'' खुश और तरोताजा हो कर हंसिका ने पूछा.

''तुम्हारा स्कूल 7 बजे से है. अभी जा कर सो जाओ,'' उस की बात सुन कर मम्मी बहुत हैरान थीं. वह हमेशा स्कूल जाने से कतराती थी, लेकिन आज वह जल्दी उठ गई थी और स्कूल जाने के लिए इतना ज्यादा तत्पर थी.

हंसिका फिर से अपने कमरे में गई और लेट गई. उस ने सोने की कोशिश की लेकिन सो न सकी. जल्दी ही घड़ी ने साढ़े 6 बजने की घंटी बजाई और हंसिका ने सोचा कि आज उस की इच्छा पूरी हो गई है.

हंसिका तैयार हुई और उस ने अपनी पीठ पर बैग टांगा तथा दरवाजा खोला. स्कूल की बस पहले से ही उस का इंतजार कर रही थी. जब वह बस में चढ़ गई तो बस ड्राइवर ने मुसकराते हुए हैरानी से पूछा, ''आज तुम्हें क्या हो गया? इन 5 वर्षों में यह पहली बार है जब मुझे तुम्हें बुलाने के लिए 5-6 बार हौर्न नहीं बजाना पड़ा.''

मुसकराते चेहरे के साथ हंसिका अपनी सीट की ओर गई, जिसे उस के दोस्तों ने उस के लिए सुरक्षित रखा हुआ था.

''हंसिका, हम अपनी उत्सुकता पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे हैं,'' मोहित ने हंसिका से फुसफुसा कर कहा ताकि रहस्य हर हाल में रहस्य बना रहे.

''यही हाल मेरा भी है,'' हंसिका ने कहा.

बस कभी एक तरफ तो कभी दूसरी तरह झूल रही थी और रास्ते भर झूलती हुई चलती जा रही थी. कुछ बच्चे आपस में ही बातचीत कर रहे थे जबकि कुछ बेसुरी आवाज में गाना गा रहे थे. कुछ हंसिका और उस के दोस्तों की तरह ही फुसफुसा कर एकदूसरे से बातें कर रहे थे.

बस ने एक जोर का झटका लिया और रुक गई क्योंकि स्कूल आ चुका था. तीनों दोस्त अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पा रहे थे, क्योंकि तीनों सुरंग के अंदर क्या हो सकता था, इस बात को ले कर ज्यादा उत्सुक थे. क्या वहां एक नई दुनिया में जाने के लिए बड़ी सी नाली होगी? वे सभी दोस्त एक काल्पनिक दुनिया में खो से गए थे.

''ट्रिंग, ट्रिंग, ट्रिंग,'' स्कूल की घंटी बजी. यह लंचब्रेक की सूचना थी, लेकिन बच्चों ने सब से पहले खेलने को तवज्जो दी और उस के बाद खाना खाने का विचार बनाया.

हंसिका और उस के दोस्त ऐसे बच्चे थे जो सब से पहले ग्राउंड में खेलने के लिए पहुंच चुके थे.

''सब से पहले अंदर कौन जाएगा?'' टीना ने पूछा.

''तुम,'' मोहित ने हंसिका की ओर इशारा कर के कहा.

''नहीं, तुम नहीं,'' टीना ने मोहित को इशारा करते हुए कहा. आपस की चर्चा जल्दी ही एक कोलाहल में बदल गई और कुछ मिनट बाद फैसले को अंतिम रूप दिया गया.

''ओके, जिस ने सुरंग को सब से पहले देखा था, वही सब से पहले अंदर जाएगा,'' टीना हंसिका की तरफ मुड़ते हुए बोली.

''ओके, तो चलो, चलते हैं,'' ऐसा कहते हुए हंसिका ने घास और झाड़ियों को हटाया और अपनी बाहों को फैलाया तथा अंदर चली गई.

''आओ, यहां कुछ भी नहीं है. हम कुछ पा सकते हैं, अगर आगे बढ़ेंगे.''

हंसिका के अंदर जाने के बाद अब टीना की बारी थी, वह अंदर गई. एक बार टीना ने जब फिर से यह सुनिश्चित कर लिया कि वहां कोई जंगली जानवर नहीं है, मोहित ने अपने हाथ फैलाए और अपने डगमगाते कदमों से धीरेधीरे रेंग कर अंदर चला गया.

गलियारा अंधेरा और तुड़ामुड़ा था. कभीकभी वहां से बहुत बुरी दुर्गंध आती थी और वे उस दुर्गंध से बहुत परेशानी महसूस कर रहे थे.

''मैं थोड़ी दूरी पर प्रकाश देख सकती हूं,'' हंसिका ने घोषणा की. अंधेरे में यह सुन कर बच्चे मुसकराने लगे. उन के दांत चमक रहे थे.

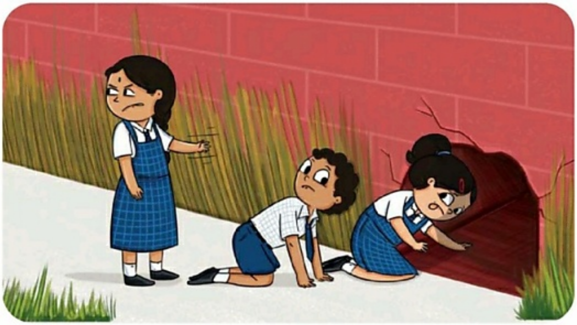

‘‘हुर्रे, लगता है, हम फंतासी की दुनिया में पहुंच गए हैं,’’ मोहित ने आनंदित हो कर कहा. सभी दोस्त रेंगते रहे. वे निकास के निकट आ गए थे और प्रकाश ने उन्हें अपनी आंखों को बंद करने को मजबूर कर दिया.

‘‘मैं कार का हौर्न सुन सकती हूं,’’ टीना ने कहा.

‘‘हम सब भी सुन सकते हैं. मुझे तो यह पता ही नहीं था कि फंतासी की दुनिया के ऐंजल्स ने कारों का इस्तेमाल करना भी शुरू कर दिया है,’’ मोहित ने कहा.

‘‘हो सकता है कि वे आधुनिक बन गए हों,’’ हंसिका ने जोर दे कर कहा.

‘‘थप, थप, थप,’’ जोर की आवाज हुई.

तीनों दोस्त जमीन पर गिर गए लेकिन बिलकुल भी घायल नहीं हुए. उन्होंने जब अपनी आंखें खोलीं, तो उन्होंने वही सड़क को देखा, उन्हीं लोगों को और यहां तक कि वही मोहन काकू को देखा जो अपने अचार की दुकान पर बैठे हुए ऊंघ रहे थे.

‘‘देखा, हम स्कूल के बाहर आ गए हैं,’’ हंसिका खुश होते हुए बोली.

‘‘हां,’’ हंसिका के दोनों दोस्तों ने कहा.

‘‘चलो, हम कुछ अचार ले लेते हैं,’’ टीना ने कहा, लेकिन तब तक स्कूल की घंटी बज गई.

तीनों दोस्त अपने स्कूल के लिए पीछे की ओर जाने लगे. हंसिका ने घास और झाड़ियों से सुरंग के रहस्य को ढक दिया और तीनों दोस्त अपनी क्लास में लौट आए.

‘‘आज हम ने कितनी आश्चर्यजनक खोज की,’’ मोहित ने फुसफुसा कर कहा.

‘‘हां, अब हम रोज अचार खा सकते हैं,’’ टीना ने कहा, उसे अचार का बहुत शौक था.

‘‘लेकिन हम अपनी इस रहस्यमयी सुरंग को क्या नाम देंगे?’’ हंसिका ने पूछा. तीनों दोस्त यह प्रश्न सुन कर सोचने लगे.

‘‘गुप्त सुरंग?’’ टीना ने सुझाव दिया.

‘‘हां, यह सब से अच्छा रहेगा,’’ हंसिका ने खुशी जाहिर करते हुए कहा. तीनों दोस्त अपनी खोज को ले कर बहुत खुश थे. उस के बाद, हंसिका फिर कभी भी स्कूल जाने से नहीं हिचकिचाई. वह रोज स्कूल जाने लगी. आखिर यह छिपी सुरंग यानी गुप्त सुरंग का ही कमाल था. ●

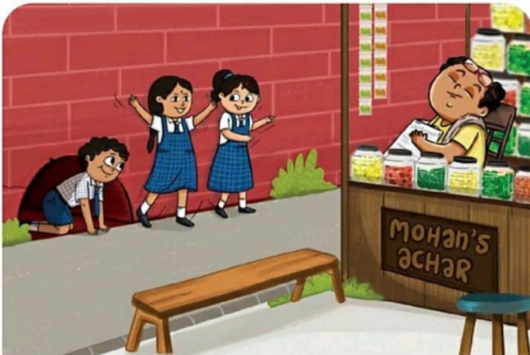

पद चिन्हों का मिलान करो

जानवरों को बारिश में काफी दूर तक जाना पड़ा. क्या आप पदचिन्हों का मिलान सही जानवर के साथ कर सकते हैं?

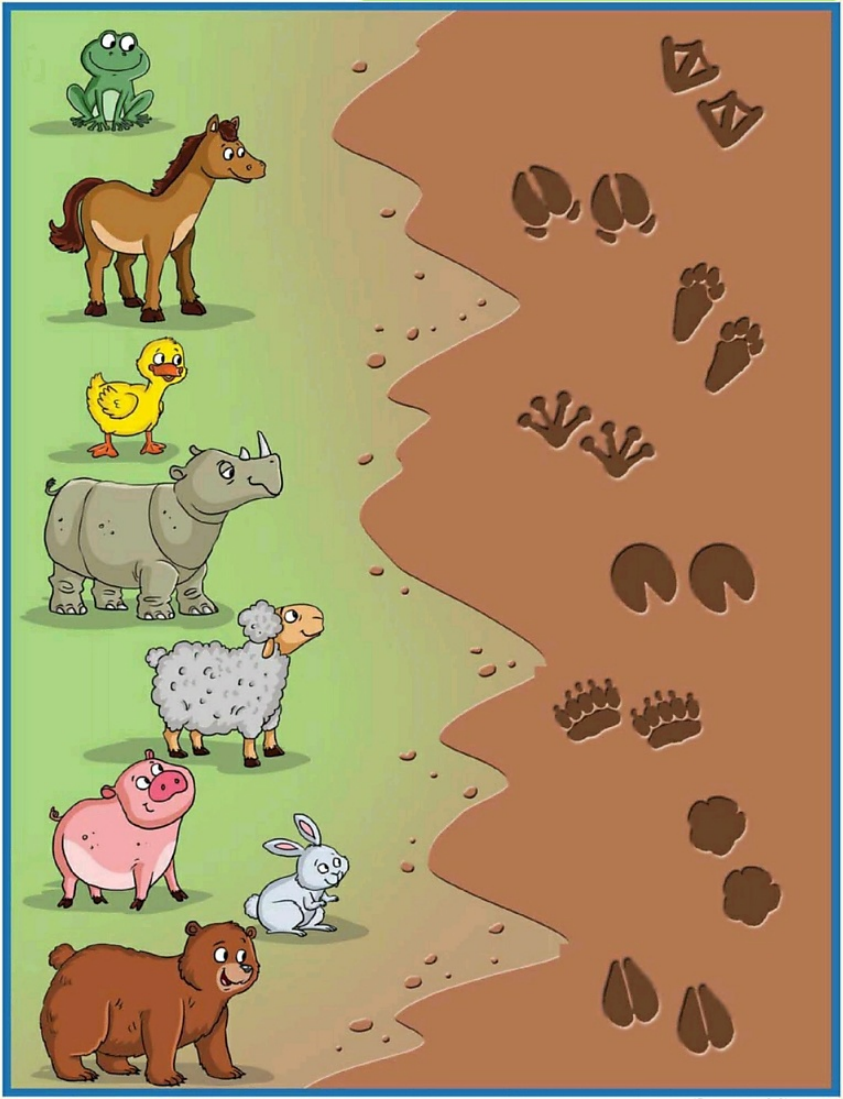

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

छाता

पूजा नंदनवार

स्मार्ट

चार्टपेपर का इस्तेमाल करते हुए एक व्यावहारिक यानी उपयोगी छाता खेलने के लिए बनाएं.

आप को चाहिए : 2 रंगीन चार्ट पेपर, ब्लैक चार्ट पेपर, व्हाइट चार्टपेपर, कैंची, पंचिंग मशीन, ग्लू.

ऐसे बनाएं :

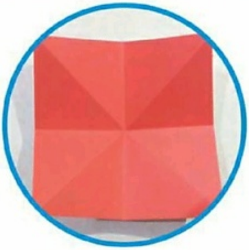

1. विकर्ण और लंबवत यानी सीधे आकार में रंगीन चार्टपेपर को मोड़ें जैसा कि चित्र में दिखाया गया है. पेपर 4 वर्ग आकार में बंट जाएंगे.

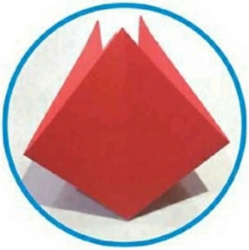

2. विकर्ण रेखाओं को दो विपरीत वर्ग पर अंदर की ओर मोड़ें.

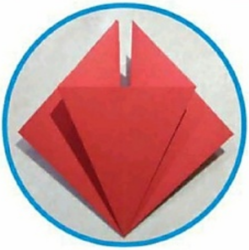

3. हरेक किनारे को मोड़ दें जैसा कि चित्र में दिखाया गया है.

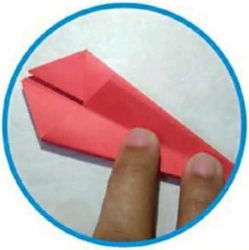

4. सभी किनारों पर अब सभी फ्लैप को अंदर की ओर मोड़ दें. ऐसा ही अन्य रंगीन चार्टपेपर के साथ भी करें.

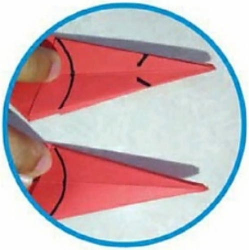

5. जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, दोनों ही मुड़ी हुई शीट्स पर मार्किंग कर लें.

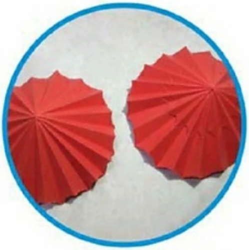

6. मार्किंग के अनुसार उन्हें काट लें और खोल दें.

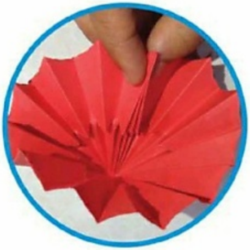

7. डबल कट वाले पेपर को लें और इसे विपरीत दिशा में मोड़ दें जैसा चित्र में दिखाया गया है.

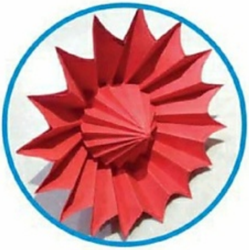

8. दोनों शीट्स को एकसाथ ग्लू से चिपका दें, जैसाकि चित्र में दिखाया गया है.

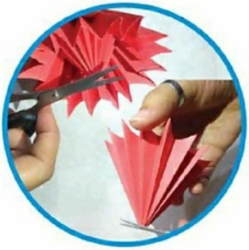

9. छाते के नोकदार किनारे पर दो छेद बना लें, जैसा कि दिखाया गया है.

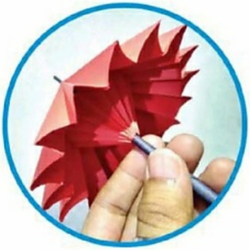

10. ब्लैक चार्ट पेपर को रोल कर एक पतली सी ट्यूब बना लें और इसे छाते में डाल दें.

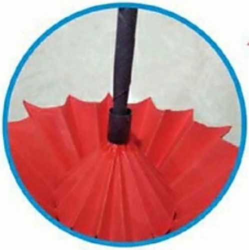

11. सुनिश्चित करने के लिए ब्लैक चार्ट पेपर के एक टुकड़े को रोल करें और दोनों नोकदार किनारे पर इसे चिपका दें. छाते को सजा लें.

अब आप का छाता बन कर तैयार है.

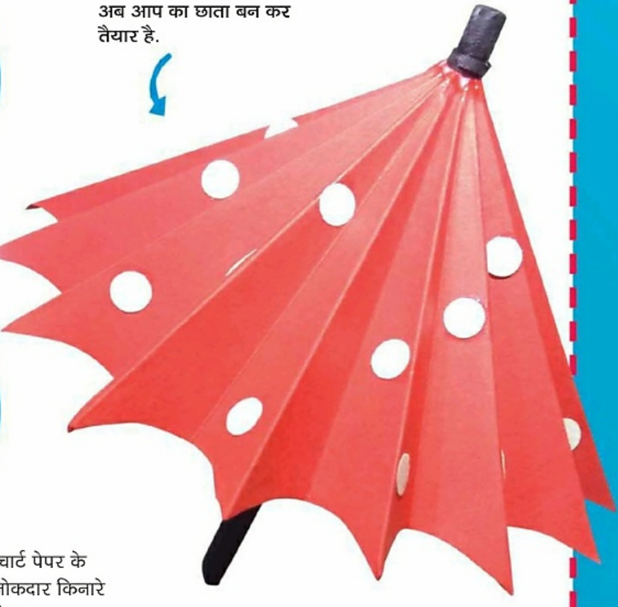

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि
writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

चित्र पूरा करें

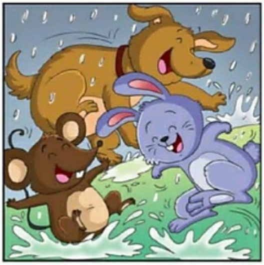

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

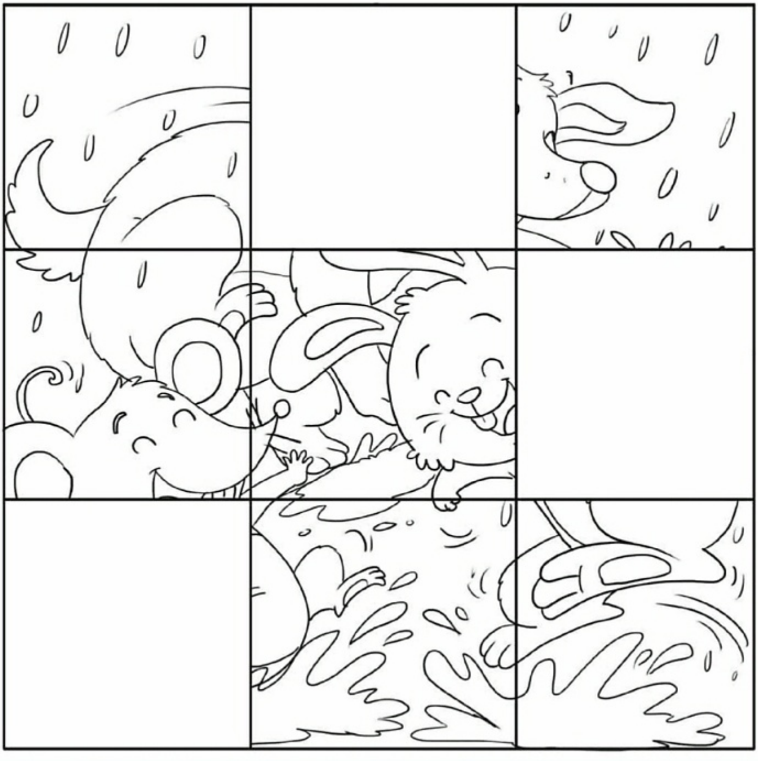

मोना और काजल की जासूसी

कहानी ● एस वरालक्ष्मी

जब मोना और उस की दोस्त काजल अपने घर लौट रही थीं, तभी शोरगुल ने उन का ध्यान अपनी तरफ खींचा.

उन के पड़ोसी मिस्टर कुमार के घर के सामने भीड़ जमा थी. बाहर पुलिस की एक जीप खड़ी थी और तीन पुलिस वाले उन से बात कर रहे थे.

उत्सुकता में लड़कियां उन के निकट चली गईं. उन्हें पता चला कि मिस्टर कुमार अपने परिवार के साथ छुट्टियां मनाने कहीं दूर गए थे तो बीती रात उन के घर में चोरी हो गई.

पुलिस ने पास खड़े लोगों के अलावा दो भिखारियों से भी पूछताछ की जो वहीं खड़े थे. उन में से एक लंगड़ा था और दूसरा अंधा.

अंधा भिखारी अपनी अपंगता बताते हुए पुलिस की मदद करने में असमर्थ था जबकि लंगडे भिखारी ने उन्हें बताया कि उस ने उस समय तीन लोगों को देखा था जो मोटेतगड़े थे और उन के सिर पर बाल काफी लंबे पोनीटेल यानी घोड़े की पूंछ की तरह थे.

सबकुछ नोट करने के बाद पुलिस चली गई. अगले दिन काजल कुछ दिन बिताने के लिए मोना के घर चली गई, क्योंकि उस के मम्मीपापा कहीं दूर गए थे.

दोनों लड़कियां सड़क के सामने पहली मंजिल की बालकनी पर गईं और आलस्य में डूबी आंखों से लोगों को सड़क पर आतेजाते देखने लगीं.

भिखारियों को छोड़ कर ज्यादातर चेहरे उन्हें जानेपहचाने लगे.

तभी एक कार आई और तीन मोटेतगड़े स्पोर्टिंग पोनीटेल वाले लोग कार से बाहर निकले.

मोना ने काजल का ध्यान उस ओर खींचा. उत्साहित काजल ने पूछा, ''क्या तुम्हें लगता है

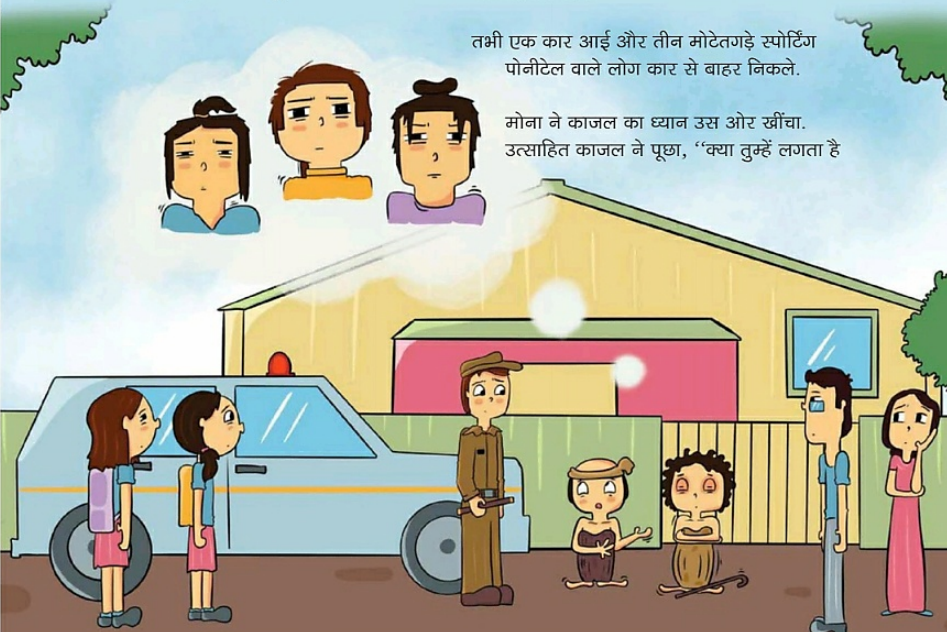

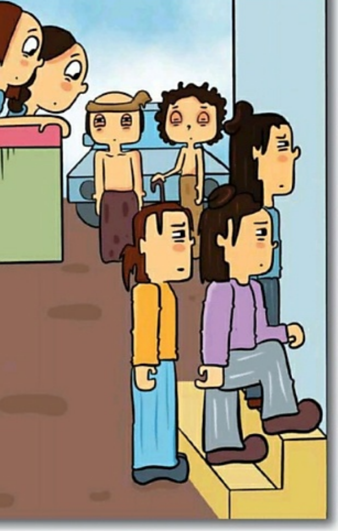

कि ये वही लोग हैं?''

मोना ने यह स्वीकार किया कि वह निश्चित हो कर कुछ नहीं कह सकती है और उस ने भिखारी के हावभाव की पड़ताल की, लेकिन उस का चेहरा भाव भावशून्य था यानी कोई भाव नहीं था.

उन लोगों ने एक बिल्डिंग में प्रवेश किया, जिस में जिम का संकेत बना हुआ था.

थोड़ी देर बाद मम्मी ने लड़कियों को अंदर बुला लिया और उन की चर्चा समाप्त हो गई.

उस के बाद लगभग मध्यरात्रि में मोना ने एक खास तरह की आवाज सुनी.

उस ने जल्दी से काजल को जगाया और उस के बाद लड़कियों ने पहली मंजिल की खिड़की से झांक कर बाहर देखा.

उन्होंने देखा कि दो आदमी मिस्टर आनंद के पोर्च यानी बरामदे में चुपके से घूम रहे हैं और कंबल में पूरी तरह सिर से पांव तक ढके हुए हैं. मिस्टर आनंद भी उन के घर के ठीक सामने रहते हैं. मिस्टर आनंद छुट्टियों में घर से बाहर गए हुए हैं.

घुप अंधेरा होने की वजह से लड़कियां कुछ भी समझ नहीं पाईं.

उन्होंने तुरंत पुलिस को कौल कर दिया. जब पुलिस आई, तो लड़कियों ने उन्हें सबकुछ बता दिया.

हालांकि सड़क पर घूमने वाले दोनों भिखारियों को छोड़ कर अब वहां कोई नहीं था.

जब पुलिस ने उन से पूछा तो लंगड़े भिखारी ने बताया कि उस ने दोबारा उन्हीं मोटेतगड़े लंबीचोटी वाले तीन लोगों को देखा.

लड़कियों ने एकदूसरे से इशारों में बात की. उन्होंने तो सिर्फ दो लोगों को ही देखा था. तीसरा कहां से आ गया? वे सिर से ले कर पैर तक कंबल ढके हुए थे. भिखारी इतनी सहीसही जानकारी कैसे उन के बारे में दे सकते थे?

पुलिस ने पूछा, ''क्या तुम ने उन्हें दिन में यहां आसपास देखा है?''

भिखारी ने अस्पष्ट रूप से कहा, ''वे जानेपहचाने लगते हैं, लेकिन मैं उन्हें ठीक से पहचान नहीं पाया.''

निश्चित रुप से भिखारी उन तीन लोगों के बारे में सोच रहा था, जिन्हें उस ने कल देखा था. लड़कियां हैरानपरेशान थीं.

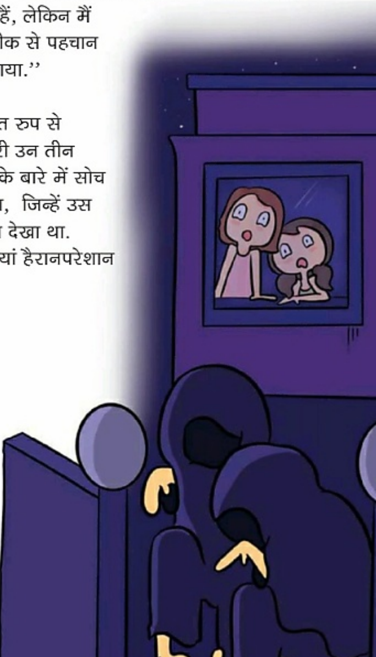

पुलिस के जाने के बाद लड़कियां मोना के कमरे में इस बारे में चर्चा करने लगीं.

मोना ने कहा, “इस से साफ होता है कि चोर को हर व्यक्ति की गतिविधि की जानकारी थी. वह तभी चोरी करता है जब घर का मालिक कहीं बाहर गया होता है. हम ने तो दो लोगों को देखा था जबकि भिखारी कहता है कि उस ने तीन लोगों को देखा है. वे कौन हैं? मैं समझती हूं कि हमें कल शाम छानबीन करने के लिए जिम जाना चाहिए.”

अगले दिन जिम में मोना ने मैनेजर से मधुरता से कहा, “सर, मेरे अंकल एक फिल्म बना रहे हैं उन्हें उस के लिए तीन गठीले शरीर वाले व्यक्तियों की तलाश कर रहे हैं जिन की लंबी चोटियां हों और जो सेवक की भूमिका निभा सकते हों. क्या आप किसी को जानते हैं जिन की इस काम में रुचि हो?”

खीसें निपोरते हुए मैनेजर बोला, “हां, ऐसे लोग कल यहां थे, लेकिन उन्हें ऐसे काम में रुचि नहीं है, क्योंकि उन के पापा एक बड़े फिल्म मेकर और अमीर आदमी हैं. वे तीनों भाई हैं और अपने पापा की फिल्म के लिए ट्रेनिंग कर रहे हैं जिस में उन्हें मुख्य रूप से लीडरोल यानी मुख्य भूमिका निभानी है.”

निराश हो कर लड़कियों ने उसे धन्यवाद दिया और वहां से वापस चल दीं.

काजल ने चुटकी लेते हुए कहा, “मेरा सिर घूम रहा है.”

मोना मुसकराई लेकिन उस ने कहा, “इस से कोई फायदा नहीं होने वाला. चूंकि ये लोग अमीर हैं, मुझे लगता है कि हम उन्हें साफतौर से संदिग्धों की सूची से खारिज कर सकते हैं.”

अचानक एक कार ने हौर्न बजाया और एक जोरदार आवाज के साथ भिखारियों के सामने रुकी इसलिए वे हड़बड़ा कर दौड़ गए.

जैसे ही तीनों भाई बाहर निकले, भिखारी उन्हें गाली देने लगे.

तीनों ने माफी मांगी और बताने की कोशिश की कि उन की कार की ब्रेक में कुछ समस्या है.

उत्साहित हो कर मोना ने पूछा, “क्या तुम ने सब कुछ देखा?”

काजल ने कहा, “हां, उन्हें अपनी कार की तुरंत सर्विस करानी चाहिए.”

मोना ने बताया, “नहीं, यह बात नहीं है. क्या तुम ने भिखारियों के रिएक्शन देखे? तथाकथित वह लंगड़ा भिखारी अपनी जान बचाने के लिए रास्ते से कूद गया. उस का पैर सही था और अंधे भिखारी के चेहरे पर भी आतंक का भाव था, क्योंकि उस ने सोचा कि कार उन्हें कुचलने वाली है. इस का मतलब यह हुआ कि वह सबकुछ ठीक से देख सकता है. अब हम उन्हें किसी तरह अपने जाल में फंसाएं. आओ, मेरे साथ.”

धीरेधीरे चलते हुए वे भिखारी पास आ गए. मोना ने

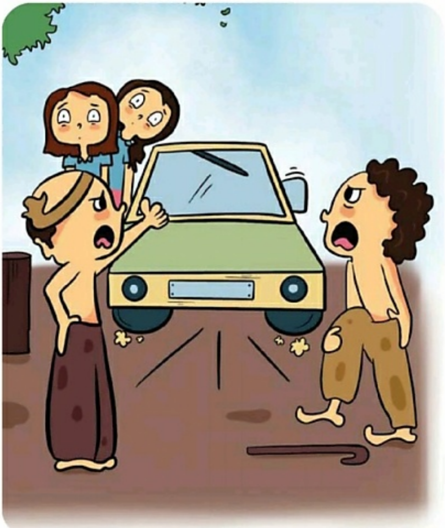

कहा, ''अब तुम तब तक मेरे घर में मेरे साथ रहोगी जब तक कि तुम्हारे मम्मीपापा लौट नहीं आते हैं.''

काजल बोली, ''ओह, हां.''

लापरवाही से यह कहते हुए, वे आगे बढ़ गईं. इस के बाद जब वे काफी दूर चली गईं, तो मोना ने विस्तार से बताया कि कैसे वह चाहती थी कि ये भिखारी जान जाएं कि आज काजल का घर भी बिना मालिक के रिक्त पड़ा है. वह उन्हें चोरी करने के लिए प्रेरित करेगा और इस तरह से उन्हें फंसाने के लिए जाल फैलाया.

उस रात लड़कियां काजल के घर में पिछले दरवाजे से अंदर चली गईं और हौल में काले परदे में पीछे छिप गईं.

मोना को पूरा विश्वास था कि चोर सब से पहले बेडरूम में घुसेगा, जहां लोग सामान्यतौर पर रुपए और गहने रखते हैं.

लगभग मध्यरात्रि में उन्होंने किसी के कदमों की आहट सुनी. कोई ताले में चाबी लगा रहा था.

उन्होंने अपनी सांसें रोक रखी थीं वे दोनों सिर से पांव तक काले कंबल से ढके हुए थे.

मोना ने अपने मोबाइल से वीडियो बना कर सबकुछ कवर कर लिया था.

दरवाजा बंद करते ही उन दो चोरों ने अपने शरीर से कंबल हटा दिए और उन की पहचान उजागर हो गई.

वे दोनों वही भिखारी थे और दोनों विकलांग नहीं थे.

जैसा पहले से अंदाजा था, उन्होंने बेडरूम में ही पहले प्रवेश किया.

वे अलमारी खोलने की कोशिश कर रहे थे ठीक तभी मोना चुपके से बेडरूम की ओर गई और उस ने बाहर से दरवाजा बंद कर के ताला लगा दिया.

उस के बाद मोना ने पुलिस को फोन किया और सबकुछ विस्तार से बताया.

कुछ ही देर में पुलिस वहां आई और उस ने चोरों को पकड़ लिया. मोना ने सुबूत के तौर पर उन की वीडियो पुलिस को सौंप दी.

मोना के मम्मीपापा और पूरे महल्ले के लोग वहां जमा हो गए जो वहां हो रहे कोलाहल को सुन कर जाग गए थे.

यह जान कर वहां उपास्थित लोगों और पुलिस ने दोनों लड़कियों को शाबाशी दी और उन के जासूसी से भरे कारनामे काफी सराहना की. ●

KAVYA KARUNAN

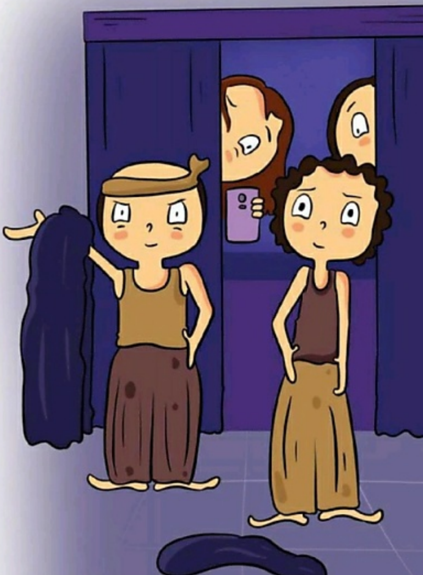

सुलझाएं

छाते का इस्तेमाल करें और रिक्त स्थानों को भरें. हरेक कौलम और पंक्ति में हरेक छाता पैटर्न एक ही बार स्थान ले सकता है.

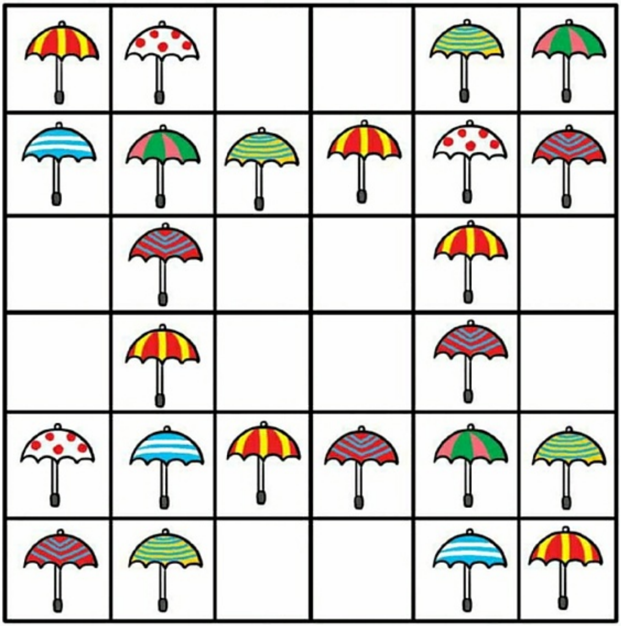

लीचियों का मूल्य निकालें :

70, 68, 64, 58, 🍓 40

जामुन का मूल्य निकालें :

🍓 + 🫐 = 55

🍓 - 🫐 = 45

अमरूद का मूल्य निकालें :

1 + 🍓 = 51

🫐 + 7 = 12

🫐 + 🍓 = 🍐

🍐 = ?

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

दादाजी और मानसून

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

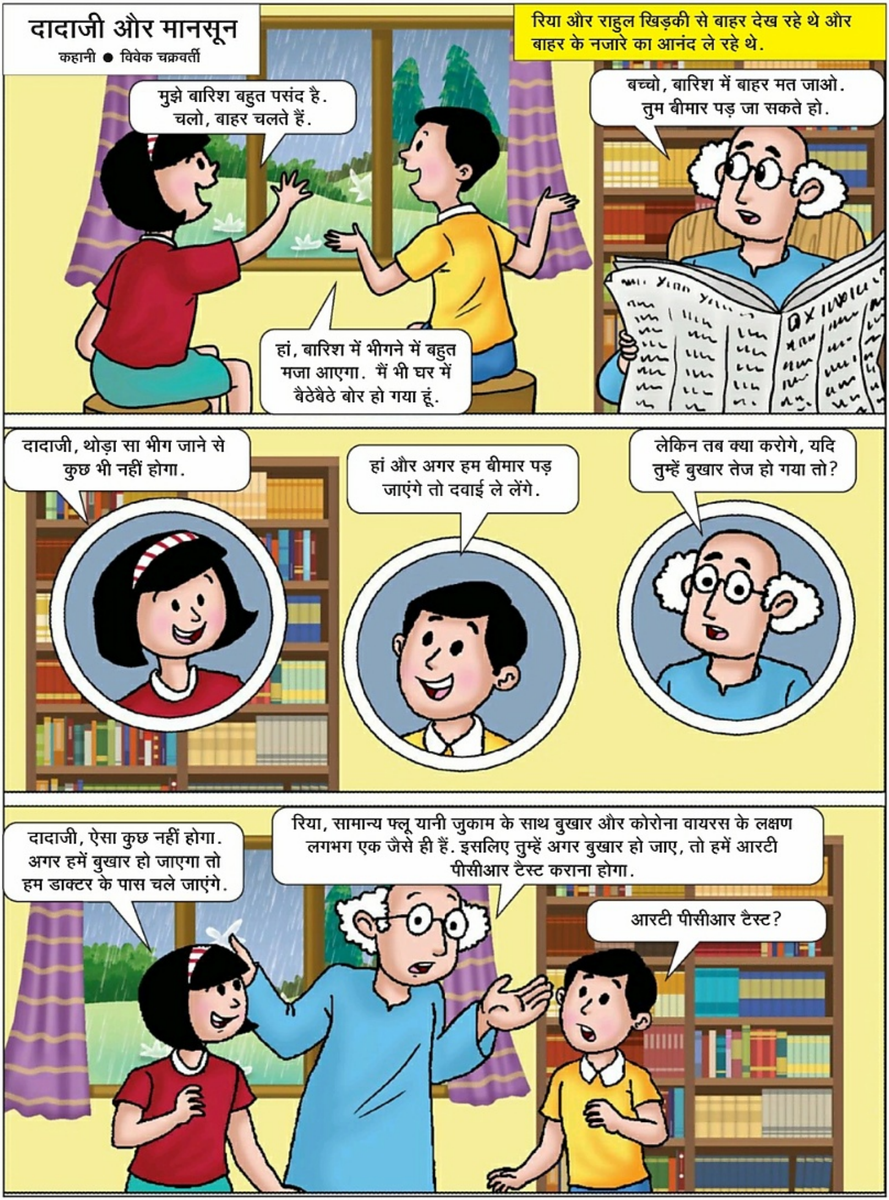
रिया और राहुल खिड़की से बाहर देख रहे थे और बाहर के नजारे का आनंद ले रहे थे.
मुझे बारिश बहुत पसंद है. चलो, बाहर चलते हैं.
हां, बारिश में भीगने में बहुत मजा आएगा. मैं भी घर में बैठेबैठे बोर हो गया हूं.
बच्चो, बारिश में बाहर मत जाओ. तुम बीमार पड़ जा सकते हो.
दादाजी, थोड़ा सा भीग जाने से कुछ भी नहीं होगा.
हां और अगर हम बीमार पड़ जाएंगे तो दवाई ले लेंगे.
लेकिन तब क्या करोगे, यदि तुम्हें बुखार तेज हो गया तो?
दादाजी, ऐसा कुछ नहीं होगा. अगर हमें बुखार हो जाएगा तो हम डाक्टर के पास चले जाएंगे.
रिया, सामान्य फ्लू यानी जुकाम के साथ बुखार और कोरोना वायरस के लक्षण लगभग एक जैसे ही हैं. इसलिए तुम्हें अगर बुखार हो जाए, तो हमें आरटी पीसीआर टैस्ट कराना होगा.
आरटी पीसीआर टैस्ट?

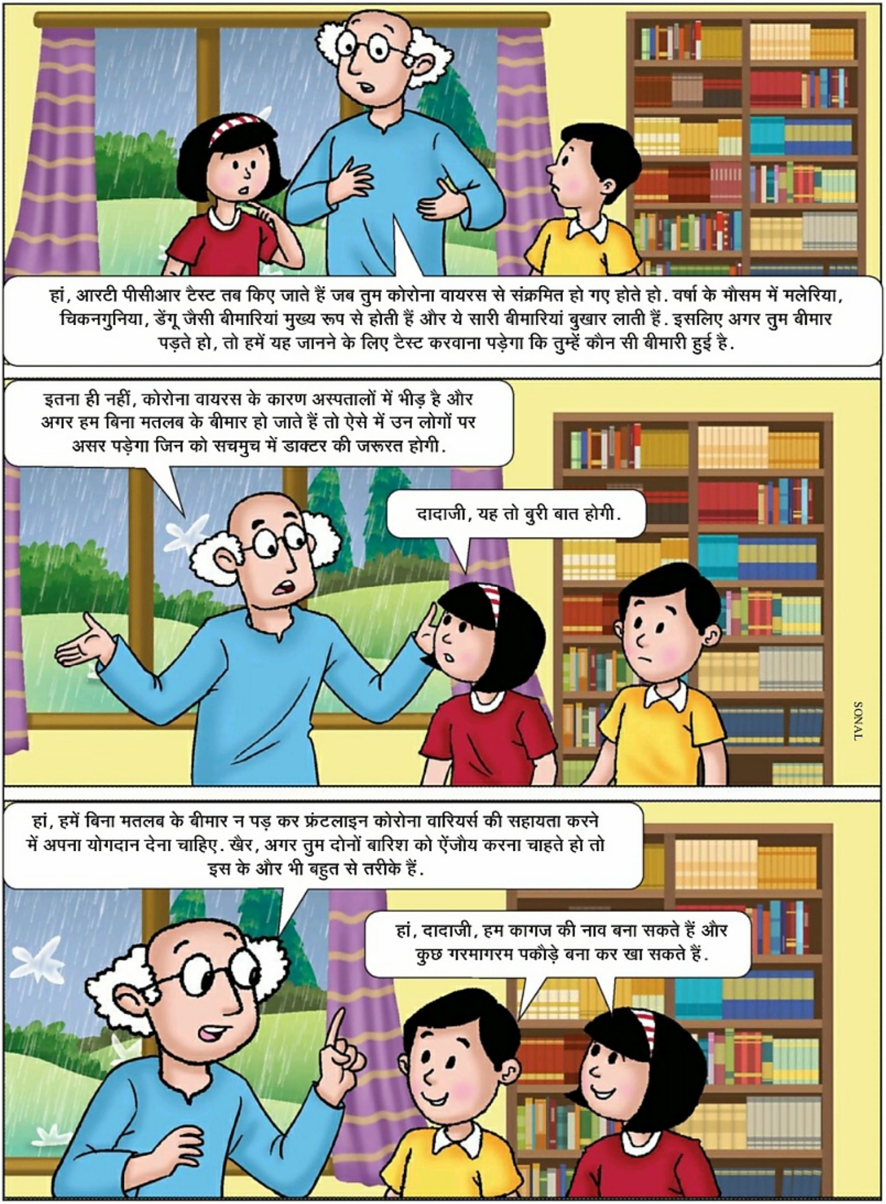
हां, आरटी पीसीआर टैस्ट तब किए जाते हैं जब तुम कोरोना वायरस से संक्रमित हो गए होते हो. वर्षा के मौसम में मलेरिया, चिकनगुनिया, डेंगू जैसी बीमारियां मुख्य रूप से होती हैं और ये सारी बीमारियां बुखार लाती हैं. इसलिए अगर तुम बीमार पड़ते हो, तो हमें यह जानने के लिए टैस्ट करवाना पड़ेगा कि तुम्हें कौन सी बीमारी हुई है.
इतना ही नहीं, कोरोना वायरस के कारण अस्पतालों में भीड़ है और अगर हम बिना मतलब के बीमार हो जाते हैं तो ऐसे में उन लोगों पर असर पड़ेगा जिन को सचमुच में डाक्टर की जरूरत होगी.
दादाजी, यह तो बुरी बात होगी.
SONAL
हां, हमें बिना मतलब के बीमार न पड़ कर फ्रंटलाइन कोरोना वारियर्स की सहायता करने में अपना योगदान देना चाहिए. खैर, अगर तुम दोनों बारिश को ऐंजौय करना चाहते हो तो इस के और भी बहुत से तरीके हैं.
हां, दादाजी, हम कागज की नाव बना सकते हैं और कुछ गरमागरम पकौड़े बना कर खा सकते हैं.

नन्ही कलम से

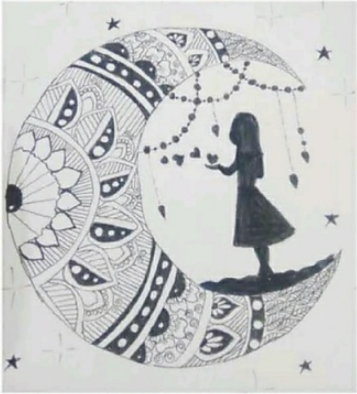

उन्नति बंसल, 10 वर्ष
मेरठ

दिखने में एक सामन लेकिन भिन्न

एक लड़का नीले रंग की ड्रैस और चश्मा पहने हुए है. वह हर समय रोता है. उसे नहीं पता कि बात कैसे करते हैं. वह हमेशा मेरे ऊपर चीखता है. इसलिए कोई भी उसे पसंद नहीं करता. एक लड़का जिस ने चश्मा और नीली ड्रैस पहनी है, लेकिन वह हर समय चीखता और रोता नहीं है. उसे पता है कि किसी से कैसे बात करनी है. वह कभी भी मेरे ऊपर नहीं चीखता और हर कोई उसे प्यार करता है. दो लड़के हैं, दोनों ही चश्मा लगाए हुए हैं. वे दिखने में एक जैसे हैं लेकिन अंदर यानी आत्मा से दोनों बिलकुल ही भिन्न हैं.

सौनक कुमार, 9 वर्ष
कर्नाटक

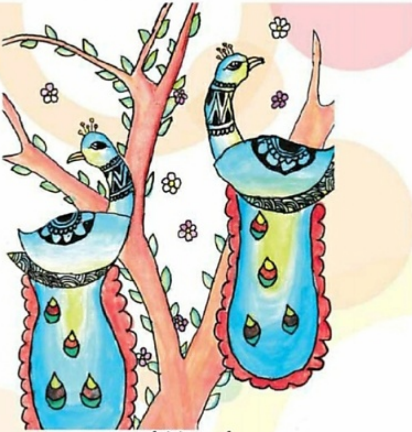

आर्य डोले, 8 वर्ष
यूएसए

चार ऋतुएं

सूरज बहुत ऊपर उगा हुआ है. ठंडी और शीतल हवा के साथ इस का कोई मिलान नहीं है, क्योंकि पलक झपकते ही वह उड़ जाती है. इस के साथ ही पतझड़ आता है. पेड़ों के पत्तों की धीमी कोमल सरसराहट की आवाज गूंज रही होती है. जैसे ही समीर यानी हवा धीरे से शांत हो कर बहनी शुरू करती है, ठंड आती है, ठीक वैसे ही जैसे सिलाई मशीन की सूई की चुभन हो, बर्फ जो चारों ओर फैली हुई है, हजारों तरह के पार्टी व्यंजन परोसती जान पड़ती है. एक पंक्ति में फूल बढ़ने और खिलने शुरू हो गए हैं. बसंत ने बगीचे में फूलों को बढ़ा दिया है और आगे भी सबकुछ ऐसा ही चलता है.

कृषंगी ओबेराय, 11 वर्ष
हरियाणा

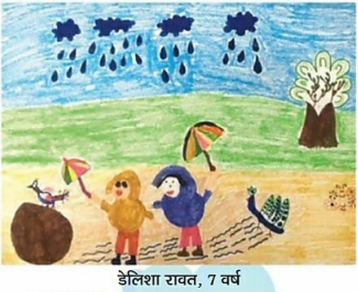

डेलिशा रावत, 7 वर्ष
नई दिल्ली

पालतू कुत्ते के साथ जीवन

पालतू जानवर के साथ जीवन बहुत बिताना बहुत आसान है, इस में आप को पसीना नहीं बहाना पड़ता, जैसा कि आप सोचते हैं. लेकिन आप हर जगह इस के पीछे भागने को तैयार नहीं हैं, रात की नींद खराब हो जाती है और हर तरफ अफरातफरी होती है. सावधान रहना, आप का हेयरबैंड कहीं भी जा सकता है. तुम्हें एक पेपर श्रेडर की जरूरत पड़ेगी, लेकिन इसे खरीदने की आवश्यकता नहीं है. यह तुम्हारे पास पहले से ही मौजूद है. तुम यहां जाते हो, वहां जाते हो, एक पूंछ है जिस का तुम पीछा हर जगह करते हो. मेरे दोस्त मुझ से पूछते हैं कि क्या मेरे भाईबहन हैं. मैं कहता हूं, हां है, उस के चार पैर हैं और वह बहुत अफरातफरी मचाता है. किताबें, जूतों का गायब होना, लेकिन उस का लाड़प्यार मुझे भाता है. कभीकभी मुझे उस के नियमों का पालन करना पड़ता है. वह अंधेरे में झपकी लेता है, चाटता और भौंकता है. अंतहीन प्यार उस के पंजों के निशान के साथ आता है, एक पालतू कुत्ते के साथ जीवन का एक सब से बेहतरीन अनुभव होता है, जिसे तुम प्राप्त कर सकते हो.

निवेदिता जयशंकर, 10 वर्ष, बैंगलुरु

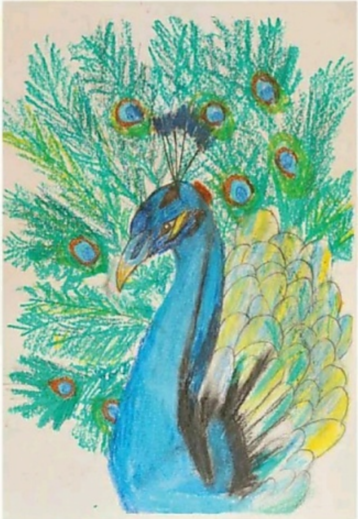

निमिश कौंडिल, 8 वर्ष
मध्यप्रदेश

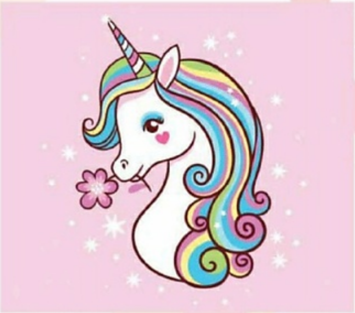

जब मैं गैंडे से मिला

खुले में बाहर ये मैं क्या देख रहा हूं, यह एक घोड़ा है जो मधुमक्खी को खाने की कोशिश कर रहा है. अरे, अब मुझे एक सुंदर सा सींग दिखाई दे रहा है, जो चमकदार है. मुझे लगता है, यह एक गैंडा हो सकता है. उस के जादुई बालों को हवा में लहराने दो. उस की आंखों में रंगीन चमक है. उस के पंख सोने की तरह चमक रहे हैं. ऐसे जीवों की ब्रिकी नहीं हो सकती है. उस की त्वचा चांद की तरह सफेद है. सुबह, शाम, रातदिन वह आकाश में ऊपर जाती है, मुझे देखते ही नमस्ते कहने की कोशिश करती है. जाओ, सुंदर गैंडे, अपने दोस्तों के साथ शामिल हो जाओ. मुझे उम्मीद है कि जादुई यात्रा कभी भी खत्म नहीं होगी.

सान्वि अग्रवाल, 10 वर्ष, कोलकाता

इस को हमारे 9 वर्षीय पाठक उत्सव अंबारिया ने गुजरात से बना कर भेजा है.

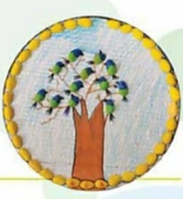

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in **8657402248**

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

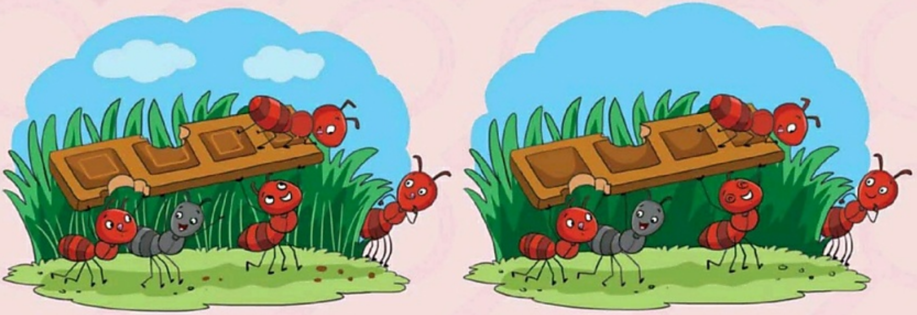

हमारी और उन की भविष्यवाणी

मनुष्य मौसम के बारे में ठीकठीक भविष्यवाणी करने में समर्थ नहीं है, कहने का मतलब वे मौसम का सही अंदाजा नहीं लगा सकते हैं. लेकिन हमारे पास उन्नत किस्म के उपकरण हैं, जो मौसम की भविष्यवाणी हमारे लिए करते हैं. हमारे विपरीत मेढक मशीनों पर भरोसा नहीं कर सकते हैं. मौसम की भविष्यवाणी करने का उन के पास एक प्राकृतिक तरीका है.

जब वे जान जाते हैं कि मौसम बदल रहा है, तो बहुत तेज, कानफोड़ू आवाज निकालना शुरू कर देते हैं जो तेज और सिर्फ तेज होती चली जाती है, खास कर उस हालात में जब उन्हें ऐसा लगता है कि तूफान आने वाला है.

वैज्ञानिकों के अनुसार मेढक जोर से टरटराने लगते हैं जब वे अपने साथी को आकर्षित करना चाहते हैं. वे ताजे साफ पानी के कुंड में अंडे भी देते हैं, जो कुंड आसानी से मिल जाते हैं जब बारिश होती है. इसलिए जैसे ही उन्हें पता चलता है कि बारिश होने जा रही है, तो वे अपने साथी को आकर्षित करने के लिए टरटराना शुरू कर देते हैं ताकि एक बार बारिश हो जाए तो उन के पास साफ और ताजे पानी के बहुत से कुंड होंगे जिस में अंडे दे सकेंगे.

जब मेढक जोर से टरटराते हैं तो इस का मतलब है कि 24 घंटे के अंदर बारिश होगी.

मेढक सीधा पानी पीने के बजाय अपने शरीर की त्वचा से पानी सोखते हैं.

भैंस का जन्मदिन केक

कहानी ● इंद्रजीत कौशिक

‘यह इतनी अच्छी खुशबू कहां से आ रही है?’ बेला चुहिया ने सोचा और नाक ऊपर कर चारों तरफ सूंघने लगी. फिर उस ने अपनी गोलमटोल आंखें घुमाईं तो उसे एक कोने में घर का किचन दिखाई पड़ा.

खुशबू के कारण उस की भूख काबू से बाहर होने लगी थी, ‘पर यह क्या? किचन तो पूरी तरह से बंद था. अब मैं क्या करूं, इस के भीतर कैसे घुसूं?’ बेला ने किचन के चारों ओर चक्कर लगाए तो उसे एक संकरा सा पाइप दिखाई दिया.

कोई उपाय न देख कर बेला उस पाइप के भीतर घुस गई. पर बात बनने के बजाय बिगड़ गई. बेला पाइप के अंदर फंस चुकी थी. अब वह न तो किचन में जा पा रही थी और न ही वापस बाहर आ पा रही थी.

‘‘मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मेरा दम घुट रहा है,’’ वह जोरजोर से चिल्ला रही थी. बेला के चिल्लाने की आवाज वहां से गुजर रही चैंसी बिल्ली ने सुनी तो वह रुक गई. चूहे को मुसीबत में देख कर वह उस की मदद के लिए आगे आई.

‘बाप रे, इसे भी इसी वक्त यहां आना था. अब यह मुझे नहीं छोड़ेगी. आज निश्चित रूप से मेरी जान जानी तय है,’ सोचते हुए बेला के पसीने छूट गए.

‘‘डरो मत, मैं तुम्हें नुकसान पहुंचाने नहीं बल्कि तुम्हारी मदद के लिए यहां आई हूं,’’ चैंसी ने बेला को आश्वस्त किया.

‘‘कैसी मदद, किस की मदद? मुझे नहीं चाहिए तुम्हारी मदद. मैं जानती हूं कि तुम मुझे यहां फंसी देख कर अपना पेट भरने आई हो,’’ घबरा कर बेला चिल्लाई.

‘‘मैं जानती हूं कि चूहे हम बिल्लियों का भोजन होते हैं, पर इस वक्त तुम मुसीबत में फंसी हो इसलिए तुम्हारी मदद करना मेरा फर्ज है,’’ चैंसी ने कहा तो बेला की जान में जान आई.

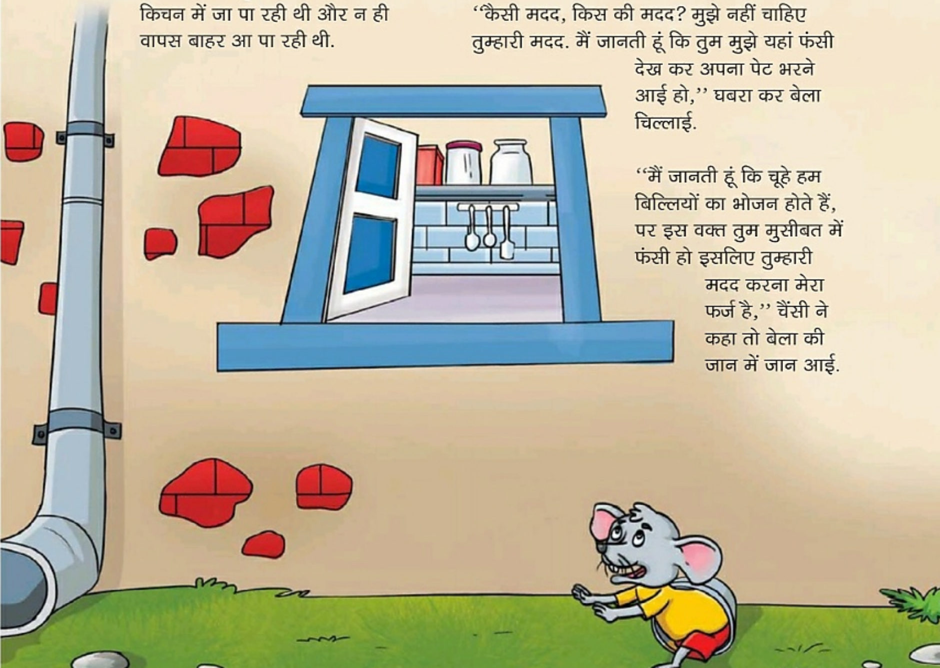

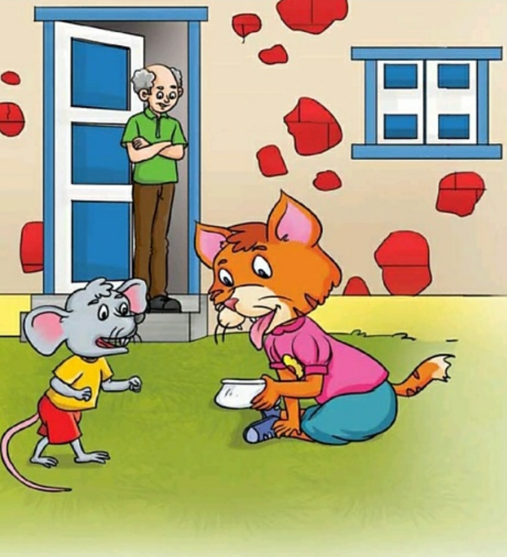

‘‘यदि ऐसा है तो मैं तुम्हारा यह अहसान जीवन भर नहीं भूलंगी, चैंसी. अब मुझे किसी तरह यहां से बाहर निकालने में मदद करो.’’

चैंसी समझ गई कि मामला जरा मुश्किल है. उस ने दिमाग पर जोर डाला तो उसे एक युक्ति सूझी. किचन के पास ही मंदिर था. वहां रखे दीपक में तेल भरा हुआ था. चैंसी वहां जा कर उस दीपक को उठा लाई. उस ने दीपक में पड़ा सारा तेल पाइप के भीतर डाल दिया. तेल बहता हुआ बेला तक पहुंचा और उस का पूरा शरीर चिकना हो गया.

‘‘अब तुम पूरी ताकत लगा कर पाइप से बाहर आने की कोशिश करो. चिकनाई के कारण शायद कोशिश सफल हो जाए,’’ चैंसी ने बेला से कहा और उस ने वैसा ही किया.

सच में चमत्कार हो गया. चैंसी का आइडिया काम कर गया और बेला आसानी से बाहर निकल गई.

‘‘चैंसी, तुम्हारा बहुतबहुत धन्यवाद. तुम्हारी मदद के बिना आज मेरा यहां से बाहर निकलना असंभव था,’’ बेला बोली.

‘‘आखिर हो तो तुम भी मेरी तरह एक जानवर ही. एकदूसरे की मदद करना अच्छी आदत है. मुझे खुशी है कि मेरी एक कोशिश से तुम्हारी जान बच गई,’’ मुसकरा कर चैंसी ने कहा और वहां से चली गई.

इस घटना को कई दिन बीत गए. बेला चैंसी की मदद वाली बात भूल गई थी. एक दिन वह यों ही खाने की तलाश में किसी घर में घुसी तो वहां उसे चैंसी दिखाई दे गई.

‘‘ले, दूध पी ले,’’ उस घर की मालकिन ने एक कटोरी में दूध ला कर चैंसी के सामने रखा.

अभी चैंसी ने कटोरी में मुंह डाला ही था कि बेला वहां आ पहुंची. ‘‘चैंसी, तुम तो बहुत दुबली और थकी हुई सी लग रही हो. क्या बात है?’’

‘‘बिलकुल नहीं, मैं तो पूरी तरह स्वस्थ हूं. तुम सुनाओ, तुम्हारे, क्या हाल हैं?’’ चैंसी ने उत्तर दिया.

असल में बेला की नजर दूध की कटोरी पर थी. दूध पीने के चक्कर में ही उस ने यह बात कही थी.

‘‘चैंसी, तुम बहुत भोली और नादान हो. इस घर की मालकिन खुद तो भैंस का गाढ़ा दूध पीती है, लेकिन तुम्हें वह पानी मिला हुआ दूध पिलाती है. इसी वजह से तुम दुबली लग रही हो,’’ बेला ने फिर से कहा तो इस बार चैंसी को लगा कि शायद वह ठीक कह रही है.

‘‘तो तुम बताओ, मैं क्या करूं?’’ चैंसी बोली.

‘‘करना क्या है, घर के पिछवाड़े भैंस बंधी है. तुम वहां जाओ और जा कर खुद ही उस का दूध पी लो. फिर दूध का फर्क तुम्हें मालूम चल जाएगा,’’ बेला ने कहा. वह जानती थी कि भैंस बहुत गुस्से वाली है. जैसे ही चैंसी वहां जाएगी, भैंस उसे मजा चखा देगी.

चैंसी जैसे ही घर के पिछवाड़े जाने के लिए वहां से हटी, बेला ने कटोरी में रखा दूध पीना शुरू कर दिया.

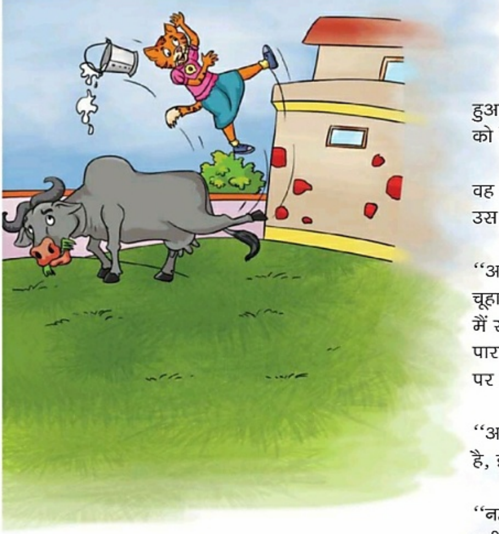

उधर चैंसी पिछवाड़े खड़ी भैंस के पास गई और उस का दूध पीने की कोशिश करने लगी.

उसे ऐसा करते देख भैंस को गुस्सा आ गया. उस ने कस कर एक लात चैंसी को मारी तो वह उछल कर आंगन में रखी उसी दूध की कटोरी पर जा गिरी.

''देखा चैंसी, भैंस का दूध पीते ही तुम्हें कितनी ताकत मिल गई. तुम सीधी उड़ती हुई आई हो यहां,'' इतना कह कर वहां खड़ी बेला जोर से हंसी तो चैंसी समझ गई कि बेला ने जानबूझ कर उसे वहां भेजा था.

''तुम ने बिलकुल सही कहा. यह बात तुम ने मुझे पहले क्यों नहीं बताई?'' चैंसी ने चेहरे पर मुसकराहट लाते हुए कहा, ''आज उस का जन्मदिन था इसलिए उस ने मुझे दूध के साथसाथ स्वादिष्ठ केक भी खिलाया. तुम्हारा बहुतबहुत धन्यवाद.''

''क्या, सचमुच भैंस ने तुम्हें केक खिलाया?'' केक का नाम सुन कर बेला के मुंह में पानी आ गया.

''और नहीं तो क्या, अभी भी उस के पास केक बचा हुआ है. तुम चाहो तो जा कर खा सकती हो?'' जैसे को तैसा सिखाने के लिए चैंसी ने उस से झूठ कहा.

वह भी भैंस के पास जा पहुंची और दूध पीने के लिए उस के आगेपीछे चक्कर लगाने लगी.

''अजीब मुसीबत है. पहले बिल्ली आई और अब यह चूहा. इन सब ने मेरी नाक में दम कर रखा है, इन्हें मैं सबक सिखाऊंगी,'' चूहे को देख कर भैंस का पारा चढ़ गया और उस ने अपना पांव उस की पूंछ पर रख दिया.

''आउच चाची, अपना पैर हटाओ, मेरी पूंछ दब गई है, इस के नीचे,'' बेला दर्द से चिल्लाई.

''नहीं हटाऊंगी, वह तो अच्छा हुआ जो मैं ने तेरे शरीर पर पैर रखने के बजाय पूंछ ही दबाई है वरना तेरा कचूमर निकल गया होता,'' भैंस बोली.

''केक का स्वाद बेला मुझे नहीं बताओगी?'' चैंसी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा.

''मुझे माफ कर दो चैंसी, तुम ने उस दिन मेरी जान बचाई, इस के बावजूद मैं ने जरा सा दूध के लालच में तुम्हें भैंस के पास मार खाने के लिए भेजा.

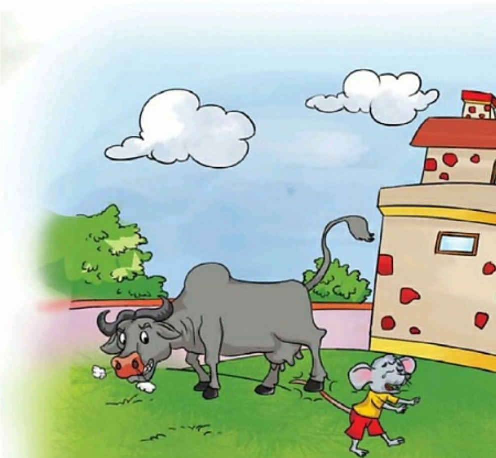

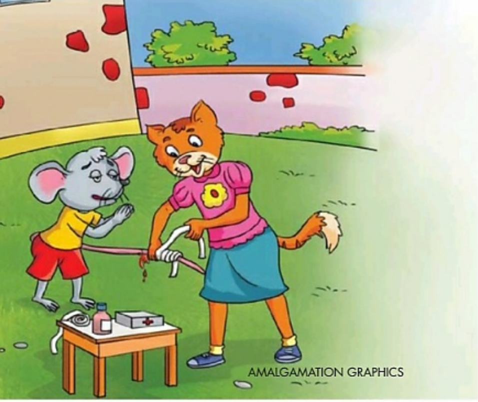
AMALGAMATION GRAPHICS

मुझे अपनी करनी का फल मिल गया है. मुझे बचा लो प्लीज,'' कहते हुए बेला की आंखों में आंसू आ गए.

तभी भैंस की मालकिन उस के लिए चारा ले कर आई तो उसे खाने के लिए भैंस आगे बढ़ी. उस के पैर हटाते ही बेला वहां से हट गई. उस की पूंछ से खून निकल रहा था.

उस की पीड़ा देख कर चैंसी से रहा नहीं गया. वह कहीं से कपड़े का टुकड़ा ले कर आई और बेला की घायल पूंछ पर लपेटने लगी. यह देख कर बेला को शर्मिंदगी महसूस हुई.

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 12 : बारिश में जानवर... :

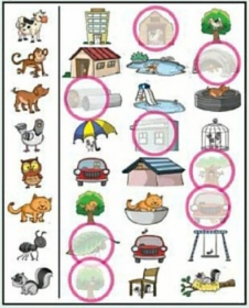

पृष्ठ 23 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

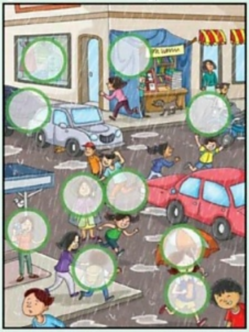

पृष्ठ 33 : पद चिन्हों का मिलान :

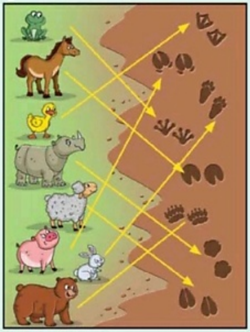

पृष्ठ 41 : सुलझाएं :

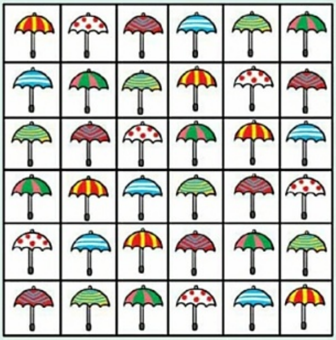

लीची : 50

जामुन : 5

अमरूद : 55

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the Delhi Press Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर

Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/06/2021. Pgs. 52

PARLE
Fab!o™ ka FUN
is very YUM!
PARLE
Fab!o™
Chocolate Creme sandwich biscuits
PARLE
Fab!o™
Vanilla Creme sandwich biscuits